नवम्बर 2004
Rs. 12 /-
चन्दामामा
दिवाली
की शुभकामनाएँ

12 X 12 is 144 : Yes, right!

12 X 12 can also be 120!

How's that ?

Take *Junior Chandamama!*
If you buy a copy month after month
you will spend Rs 144 in 12 months.

BUT, if you take out an annual subscription,
you pay only Rs 120 and you get 12 issues!
(This offer valid upto 30th November, 2004)

New Subscription / Renewal Form

Please enter a one year subscription for ***Junior Chandamama*** in my name ....

....

(If renewal, Subscription Number ....)

Home address ....

....

....

.... PIN CODE ....

I am enclosing Bank draft / Cheque No ....

on .... Bank for Rs. 120 (Add Rs. 50 on outstation cheques) / M.O. Receipt no. ....

.... issued by .... Post office.

GIFT Subscription Form

I wish to give a one-year GIFT Subscription in favour of

Name ....

Home address ....

....

.... PIN CODE : ....

Please **attach the label** below on the first copy.

I am enclosing Bank Draft / Cheque No. ....

on .... Bank for Rs. 120 (add Rs. 50 on outstation cheques) / M.O. Receipt No. ....

.... issued by .... P.O.

This is a GIFT Subscription, with love from

....

Town / City ....

चन्दामामा

सम्पुट - १०८ दिसम्बर २००४ सञ्चिका - १२

विशेष आकर्षण

भल्लूक मांत्रिक ९

क्रोधी मुनि १५

अन्यदेशों की अनुश्रुत कथाएँ २२

विष्णु पुराण ४९

अंतरंग

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १४४ रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

सपने और सपने

बाल दिवस के उपलक्ष्य में एक और बाल विशिष्टांक तुम्हारे हाथों में है। नवम्बर का महीना, जो मध्य-सत्र परीक्षाओं के पश्चात तथा अर्ध-वार्षिक अवकाशों के पूर्व आता है, बच्चों की गतिविधियों से भरपूर रहता है।

चन्दामामा पिछले पाँच वर्षों से विशिष्टांक के लिए बच्चों की लिखी कहानियों को आमंत्रित करने का तथा चुनी हुई कहानियों के लिए चित्रांकन करने हेतु कुछ बाल कलाकारों को चेन्नई लाने का एक अनोखा प्रयोग करता आ रहा है। इस वर्ष के इन सब प्रयासों का परिणाम यह अंक तुम्हारे देखने, पढ़ने और इससे आनन्द उठाने के लिए यहाँ तुम्हारे हाथों में है।

प्रविष्टि के लिए आई अनेक कहानियों क ो पढ़ने के बाद हम लोग कुछ अपने विचार देना चाहते हैं। बल्कि हमें आश्चर्य हुआ कि अधिकांश क हानियाँ सपनों के इर्द-गिर्द घूमती हैं। हम स्वीकार करते हैं कि बच्चों में स्वाभाविक रूप से स्वप्न-प्रवृत्ति होती है जो कल्पना से आती है। जो भी हो, जब कहानी को तर्क संगत रूप से निर्मित तथा वर्णित किया जाता है तो यह कह कर उसे समाप्त कर देने से कि यह सब सपना था, कहानी को अपकर्ष दे दिया जाता है।

बच्चे सामान्य रूप से प्रेक्षण की शक्ति जीवन के उषःकाल में ही उपार्जित कर लेते हैं और स्वाभाविक रूप से ज्ञान के लिए उत्सुकता और प्यास का बोध विकसित कर लेते हैं। हम चाहेंगे कि जब वे अपने मस्तिष्क में कहानियों का मंथन करें तब उनमें यथार्थ का तत्व लाने का प्रयास करें।

इसके लिए सुनिश्चित साधन है पठन। कथा-साहित्य तथा गैर कथा- साहित्य दोनों के पठन से उत्सुकता को निश्चित रूप से सन्तुष्टि मिलेगी। पठन के साथ-साथ वे सपने देखते रहें –अपने भविष्य के सपने, सपने अपनी मातृभूमि के बारे में, जैसा कि हमारे प्रिय राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम प्रायः उसमें आनन्द लेने की नसीहत देते रहते हैं।

सम्पादकःविश्वम

''सपने देखेंगे, चले आइये''

- निबंध प्रतियोगिता

हमारे हाई स्कूल के अध्यापकगण छठी कक्षा के पाठ्यांशों को पढ़ा रहे थे, जिन्हें मैंने श्रद्धापूर्वक सुना। अपना पूरा ध्यान लगाकर मैंने अध्ययन किया। वार्षिक परीक्षाओं में हर विषय में मैंने अच्छे अंक पाये और छठी कक्षा में द्वितीय पुरस्कार पाया। इस बर्ष १५ अगस्त को स्वतंत्रता दिबस के दिन अपने स्थानीय एम.एल.ए के हाथें मुझे यह पुरस्कार प्राप्त हुआ।

हर दिन की शाम को, छुट्टियों के दिन आधा दिन अपनी गली के अशिक्षित जुलाहों, पाठशाला न जा सकनेवाले विकलांग बच्चों व गृहिणियों को यथाशक्ति पढ़ाता हूँ। पहले पहल अपने ही घर में मैंने अपनी दादी के अक्षराभ्यास से यह काम शुरू किया।

अपने घर के पिछवाड़े में १ पपीते का पौधा, ३ सीताफल के पौधे, २ अमरूद के पौधे, १ आंवले का पौधा तथा, १० तुलसी के पौधे मैंने रोपे। साथ ही घर के सामने की खुली जगह में बायीं ओर नीम के पौधे को और करंज के पौधे को रोपा। हर दिन सुबह और शाम को इन पौधों को पानी देता हूँ। इन पौधों को फला-फूला देखकर कितनी खुशी होती है ! गली में रोपे गये पौधों के चारों ओर मैंने कांटों के घेरे का भी प्रबंध किया।

चूँकि मेरी उम्र छोटी है, इसलिए गांव के सरहदों व शहर में जा नहीं पाता, इसलिए शराब पीने व जूआ खेलने की लतों के जो शिकार हैं, उन्हें सुधारने का काम मुझसे नहीं हो पाता। पर जब मैं यौवन में क़दम रखूँगा तब अपने दोस्तों की एक टोली बनाऊँगा और समाज की सेवा करूँगा। शराब पीने व जूआ जैसे दुर्व्यसनों में जो लिप्त हैं, उन्हें सुधारने का भरसक प्रयत्न करूँगा। यह मेरा लक्ष्य होगा।

बड़ा होने के बाद भविष्य में उच्च शिक्षा प्राप्त करूँगा और कलक्टर जैसा उच्च सरकारी अधिकारी बनूँगा। एक आदर्श नागरिक बनकर अपने परिवार का गौरव बढ़ाऊँगा। जाति या भाषा भेद के चंगुल में नहीं फँसूँगा और ईमानदारी से जीवन बिताऊँगा। अनीति रहित समाज के निर्माण के लिए तन, मन धन से लग जाऊँगा। विकलांगों के प्रति मेरा स्नेह-भाव बना रहेगा और उन्हें भी समान अवसर प्रदान करने के लिए भरसक प्रयत्न करूँगा। देश की तरक्की और अपने देश की प्रजा की महान सफलताओं पर आनंदित होऊँगा और उन पर गर्व करूँगा।

- एल.लक्ष्मीनाथ (टि.जि.एल.वि.हाईस्कूल)

५/१६९७, एस.एस.एस.वीवर्स कालोनी,

हनुमाननगर, ओदोनी-५१८३०१, कर्नूल जिला (आँध्र प्रदेश)

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता (जून)

सर्वश्रेष्ठ विजेता प्रविष्टि

ग्रामीणों ने एक सभा बुलाई और कुछ निर्णय लिए। ग्रामीण भोले-भाले भक्त थे, इसलिए पुजारी की बात का विश्वास कर लेते हैं और उसका वेतन बढ़ाने का निर्णय लेते हैं, जिससे वह मँहगे वस्त्र औरस्वर्ण आभूषण खरीद सके और भगवान को प्रसन्न रख सके।

किन्तु दिन पर दिन उस पुजारी का लालच बढ़ता ही गया, क्योंकि एक महीने के बाद भगवान के आदेश के नाम पर पत्नी के लिए नये वस्त्र और अलंकार मांगे। ग्रामीणों ने इसे भी पूरा कर दिया। यह देखकर ग्रामीणों को पुजारी पर संदेह होने लगा। वे सब सच्चाई जानने की तरकीब सोचने लगे। तभी एक आदमी को एक तरकीब सूझी, 'अगर वे उसका पीछा करें तो शायद उन्हें कुछ पता लग जाए'। यह तरकीब सभी को उचित लगी। कुछ ग्रामीणों ने एक दिन रात में छिप कर पत्नी के साथ पुजारी की बातचीत सुनी। वह कह रहा था कि गाँववाले निरे मूर्ख हैं। मेरी बातों पर विश्वास करके उन्होंने मेरा वेतन दुगुना कर दिया और तुम्हें नये परिधानऔर अलंकार की भेंट भी दी। यह सब भगवान की कृपा है। यह देखकर ग्रामीणों ने सोचा कि यह पुजारी रोज झूठ बोलता है। अन्ततः पुजारी का लालच ग्रामीणों के सामने आ ही गया और उन्होंने लालची पुजारी को बर्खास्त कर दूसरा पूजारी रखने का निर्णय लिया। इस प्रकार पुजारी ने अधिक पाने के लालच में जो मिल रहा था उसे भी खो दिया।

रीतिका सैनी, कक्षा चार, केन्द्रीय अकादमी, जयपुर
८७६, जमना नगर, अजमेर रोड, जयपुर-३०२००६

नन्दन कानन, देता है आमन्त्रण

जैसा कि इसका शाब्दिक अर्थ है, देवों के उद्यान, नन्दन कानन ने सर्वाधिक संख्या में सफेद बाघों के आश्रय-स्थल के रूप में विश्व ख्याति अर्जित कर ली है। उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर से २० कि.मी. दूर स्थित ४५ वर्ष पुराने इस जैविक पार्क में इस समय ३० से अधिक सफेद बाघ हैं। विश्व भर के चिड़िया घरों को ५० सफेद बाघों को रखने का गौरव प्राप्त है, जिनमें से अधिकांश नन्दन कानन से भेजे गये हैं। सन् १९८० में दीपक और गंगा के, पहली ब्यान में, तीन शावक पैदा हुए। इसके पश्चात जितने बच्चे हुए उन्हें भारत के तथा अन्य चिड़िया घरों में स्थान दिये गये। नन्दन कानन में श्वेत व्याघ्रों का सफारी पार्क मोटर मार्ग की सुविधा के साथ १२ हेक्टेयर के क्षेत्र में फैला हुआ है।

नन्दन कानन में २० हेक्टेयर में फैला हुआ अलग से एक सिंह सफारी पार्क भी है जो विश्व भर में अपने ढंग का पहला है। नन्दन कानन चिड़िया घर, चण्डक वन के भव्य पर्यावरण में स्थित है जिसमें एक तरफ ५० हेक्टेयर में विस्तीर्ण कंजिया झील है। इस वन और झील में लगभग ७० प्रकार के स्तनपायी, २० तरह के सरीसृप और ८० जातियों के पक्षी शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के साथ निवास करते हैं। नन्दन कानन का एक और आकर्षण है - ३४ मछली घर जिनमें ताजे जल की मछलियों की अनेक उपजातियाँ पाली गई हैं। भारतीय चिड़िया घर के लिए ६२० मी. लम्बा हवाई रोप वे तथा केबल कार अपने ढंग की पहली व्यवस्था है। बुद्ध के शब्द अनायास ही कौंध जाते हैं : ''वन अनन्त करुणा और सद्भावना की एक अनोखी संघटित रचना है जो अपने निर्वाह के लिए कोई माँग नहीं करता और अपनी जीवन-गतिविधि के उत्पादों को उदारतापूर्वक विस्तारित कर देता है।''

भल्लूक मांत्रिक

13

(राजा दुर्मुख साहस करके अपने राज्य पर अधिकार करनेवाले सामंत का पीछा करते हुए क़िले में पहुँचा। बधिक भल्लूक और उग्रदण्ड क़िले के दर्वाजे तोड़ने की कोशिश कर रहे थे, तभी वहाँ पर माया मर्कट आ पहुँचा, लेकिन कालीवर्मा और भल्लूक मांत्रिक को वहाँ पहुँचते देख क़िले की दीवार के ऊपर से भीतर कूद पड़ा। उसके बाद...)

कालीवर्मा और भल्लूक मांत्रिक को देख बधिक भल्लूक उत्साह से भर उठा, फिर उछल-कूद करते और अपने परशु को घुमाते बोला, ''महानुभाव! ओह, कितने दिन बाद आप दोनों के दर्शन का भाग्य मुझे प्राप्त हुआ! अब मेरी तक़लीफ़ें ज़रूर दूर हो जायेंगी।''

भल्लूक मांत्रिक भैंसे पर से उतर पड़ा। बधिक भल्लूक के समीप जाकर बोला-''अरे भल्लूक, अभी से उत्साह में आकर उछल-कूद मत करो! उस विचित्र मर्कट रूप में आया हुआ व्यक्ति वास्तव में बंदर नहीं है, वह तो मिथ्या मिश्र नामक तांत्रिक का शिष्य भ्रांतिमति है, वह मेरे मंत्र-दण्ड को चुरा लाया है, पहले हमें उसे प्राप्त करना होगा।''

कालीवर्मा आश्चर्य से राक्षस उग्रदण्ड को देखते हुए बोला, ''बधिक भल्लूक, तुमने यह राक्षस, हाथी और इस परिवार को कैसे प्राप्त किया?''

ये बातें सुन उग्रदण्ड धीरे से हँस पड़ा और

बोला, ''भाई, कालीवर्मा नामक क्षत्रिय युवक तुम्हीं हो न? तुम्हारे बारे में मैंने बधिक भल्लूक के मुँह से सारी बातें सुन ली हैं। तब तो ये ही व्यक्ति भल्लूक मांत्रिक हैं न?'' फिर दूर पर खड़े चन्द्रशिला नगर के राजा जितकेतु के मंत्री तथा उसके घुड़सवारों की ओर कालीवर्मा का ध्यान आकृष्ट करते हुए बोला, ''कालीवर्मा, माया मर्कट के मुँह से हमने सुना है कि तुम लोगों का पीछा करनेवाले ये सिपाही राजा जितकेतु के द्वारा भेजे गये लोग हैं। उनके खतरे से तुम कैसे बचना चाहते हो?''

भल्लूक मांत्रिक की ओर मुड़कर कालीवर्मा बोला, ''गुरुजी! आप की क्या आज्ञा है? आप ने एक बार राजा जितकेतु को अपनी ताक़त का परिचय दिया था, ऐसी हालत में उसका मंत्री जीवगुप्त हम पर फिर से हमला करने की हिम्मत करेगा, सो यह बात मैं बिल्कुल समझ नहीं पाता!''

भल्लूक मांत्रिक ने क़िले के बंद दर्वाजों की ओर एक बार नज़र डाल कर कहा, ''मेरे गुरु को मुसीबतों में फंसानेवाले तांत्रिक का शिष्य है यह माया मर्कट। मुझे मालूम न था कि वह गुप्त रूप से मेरा अनुसरण कर रहा है, इसीलिए असावधान रहकर मैं अपना मंत्र दण्ड खो बैठा। अगर मुझे मालूम होता तो मैं अपने मंत्र-दण्ड को नदी के किनारे पेड़ पर टिकाकर नदी में नहाने के लिए उतर न पड़ता।''

बधिक भल्लूक अपने परशु को दोनों हथेलियों पर आड़े रखकर मांत्रिक के आगे आया, तब बोला, ''मांत्रिक प्रभु ! आप यह सोचकर चिंता न कीजिए कि आप का मंत्र दण्ड खो गया है, यह परशु भी तो मंत्र का प्रभाव रखता है। इसके प्रभाव के सामने उग्रदण्ड जैसा राक्षस भी घबरा गया है। आप इसे स्वीकार करके मुझे पूर्ववत मानव का रूप दे दीजिए।''

''तुम्हें तो अपने गुरु को राजा दुर्मुख का सिर समर्पित करना होगा न? क्या यह बात भूल गये?'' राक्षस उग्रदण्ड ने कहा।

राजा दुर्मुख का नाम सुनते ही भल्लूक मांत्रिक पल भर के लिए चौंक पड़ा और बोला, ''बधिक भल्लूक! क्या वह राजा अभी तक ज़िंदा है? सामंत सूर्य भूपति कौन है? क़िले के अन्दर किस किसके बीच लड़ाई हो रही है?''

बधिक भल्लूक ने संक्षेप में दुर्मुख का पीछा करनेवाले प्रसंग से लेकर सारा वृत्तांत सुनाया,

तब कहा-''मांत्रिक प्रभु ! जैसा हमने सोचा था, यह राजा वैसा दुष्ट नहीं है। फिर आप की जैसी इच्छा! आप पहले मुझे मनुष्य के रूप में बदल डालिये। इस भालू के चमड़े के भीतर की गर्मी से मैं परेशान हो रहा हूँ।''

''गुरुजी! बेचारे बधिक भल्लूक की इच्छा की पूर्ति कीजिए।'' कालीवर्मा ने समझाया।

इस पर भल्लूक मांत्रिक ने जादू के परशु को अपने हाथ में लेकर कोई मंत्र पढ़ा, फिर परशु को बधिक के पैरों से छुआ दिया। दूसरे ही क्षण उसके पैर मनुष्य के पैरों के रूप में बदल गये। इसके बाद सिर तक सारे बदन को परशु से छुआता गया। कुछ ही पलों के भीतर बधिक भल्लूक का शरीर मानव के शरीर के रूप में बदल गया, मगर उसका सिर भल्लूक का ही बना रहा।

बधिक भल्लूक ने सोचा कि अब वह साधारण मानव बन गया है, इसलिए झट से वह भल्लूक मांत्रिक के आगे साष्टांग दण्डवत करके बोला, ''मांत्रिक प्रभु! ओह! मैं कितने समय बाद फिर से मानव बन पाया हूँ! शब्दों में व्यक्त करना कठिन है कि अब मुझे कैसा सुख प्राप्त हो रहा है!''

ये शब्द सुनकर डाकू नागमल्लु के साथ सभी लोग जोर से हँस पड़े। बधिक भल्लूक चकित हो उनकी ओर देखने लगा। इस पर राक्षस उग्रदण्ड अपने पत्थरवाले गदे से बधिक के सर का स्पर्श कराकर बोला, ''बधिक भल्लूक! तुम्हारा शरीर कंठ तक मनुष्य का ज़रूर है, मगर सिर को क्या हुआ।''

बधिक ने झट से अपने दोनों हाथों से अपना सिर टटोलकर देखा तथाजोर से कराह कर बोला, ''मांत्रिक प्रभु ! यह कैसा अन्याय है? मनुष्य का शरीर और भल्लूक का सिर! साधारण भल्लूक के रूप की अपेक्षा यह रूप लोगों के बीच मेरा मजाक उड़ानेवाला है। इस रूप को लेकर मैं जनता के बीच ज़िंदा नहीं रह सकता।''

भल्लूक मांत्रिक ने चिंतापूर्ण चेहरा बनाकर कहा, ''बधिक भल्लूक! तुम फ़िक्र मत करो! फिलहाल इस सर के साथ संतुष्ट हो जाओ। चाहे सिर भल्लूक का ही क्यों न हो, उसमें जो दिमाग है, वह मनुष्य का ही है न? मेरे मंत्र दण्ड को माया मर्कट के रूप में आया हुआ दुष्ट भ्रांतिमति अपहरण कर ले गया है, जिससे मेरी थोड़ी सी मंत्र-शक्तियाँ जाती रही हैं। इसीलिए मैं पूर्ण रूप

से तुम को मानव नहीं बना पाया। फि र भी मैं अपना मंत्र दण्ड प्राप्त कर तुम्हें पूर्व रूप दिलाने की पूरी कोशिश करूँगा।''

इस पर बधिक भल्लूक आँसू भरते बोला, ''इस विचित्र रूप में देख राजा जितकेतु मुझे नगर के प्रधान बधिक का पद कैसे देंगे?''

बधिक की चिंता देख कालीवर्मा ने रहम खाकर उसके कंधे पर हाथ रखा, तब कहा, ''बधिक भल्लूक! तुम चिंता न क रो। राजा जितकेतु के मंत्री जीवगुप्त को जब मालूम हुआ कि मांत्रिक गुरु अपना मंत्र दण्ड खो बैठा है, तब वह हिम्मत करके हमारा अंत करने के ख्याल से सैनिकों को साथ ले हमारा पीछा करते हुए यहाँ तक आ पहुँचा है। हमें उन लोगों से भी अत्यंत सावधान रहना होगा।''

बधिक भल्लूक ने सिर घुमाकर मंत्री जीवगुप्त की दिशा में सहमती हुई दृष्टि से देखा, डर के मारे कांपते हुए क्षीण स्वर में बोला, ''मैं उस राजा की बात तो नहीं जानता, मगर यह मंत्री निश्चय ही मेरा सिर कटवा देगा।''

ये शब्द सुनकर भल्लूक मांत्रिक जादू का परशु फिर बधिक के हाथ देते हुए बोला, ''बधिक भल्लूक! तुम्हारे भीतर थोड़ी बहुत हिम्मत हो तो सारी बिपत्तियों से यह जादू का परशु तुम्हारी रक्षा करेगा।'' यों कहकर अपनी कमर से लटकनेवाली तलवार खींचकर बोला, ''यह तलवार मर्कट के द्वारा चुराकर ले गये हुए मंत्र दण्ड जैसी शक्तिशाली भले ही न हो, लेकिन यह जरूर ही मेरी रक्षा करने के लिए पर्याप्त है।''

''तो मेरी आजीबिका और नौकरी की बात क्या होगी? मैं यहाँ के डाकू नागमल्ल और उसके साथियों जैसे राहगीरों को लूटकर पेट भरनेवाला नीच व्यक्ति नहीं हूँ।'' बधिक भल्लूक ने कहा।

उसकी बात पूरी होने के पहले ही डाकू नागमल्ल क्रोध से मारे गरज उठा, कमर से लटकनेवाली तलवार को नीचे डालकर बोला, ''अबे, भल्लूक सिरवाले! क्या तुम मुझे नीच बताते हो? लोगों के सहारे और सैनिकों की सहायता से कोई भी कमबख्त शासन कर सकता है, मगर अकेले जंगली रास्तों से चलनेवाले राहगीरों को लूटकर जीने के लिए सच्ची हिम्मत और शौर्य चाहिए! मैंने अपनी तलवार फेंक दी है, तुम अपने जादू के परशु को नीचे रखकर मेरे साथ मल्लयुद्ध

करने को तैयार हो जाओ।'' यों कहकर नागमल्ल ने ताल ठोंक दी।

भल्लूक मांत्रिक ने क्रोध में आकर एक बार सब की ओर देखा, तब कालीबर्मा से कहा, ''कालीबर्मा, इन मूर्खों को शायद पता नहीं है कि ये लोग कैसी आफ़त में फँसे हैं? सबको पकड़कर शिरच्छेद कराने के लिए एक ओर राजा जितकेतु का मंत्री योजना बना रहा है ! क़िले के अन्दर चाहे राजा दुर्मुख बिजयी हो जाये या सामंत, हमारी हानि ही होने का खतरा है! दुष्ट माया मर्कट उन्हें हम पर उकसाने का ज़रूर प्रयत्न करेगा।''

कालीबर्मा क्रुद्ध हो तलबार खींचकर बोला, ''क्या तुम लोगों ने मांत्रिक गुरु की बातें सुन लीं? जानते हो, यहाँ पर तुम सब का नेता कौन है?'' राक्षस उग्रदण्ड को छोड़ बाक़ी सब लोग एक स्वर में चिल्ला उठे, ''कालीबर्मा की जय!''

कालीबर्मा संतुष्टिपूर्वक सिर हिलाकर राक्षस उग्रदण्ड के समीप जाने को हुआ। तभी मंत्री जीवगुप्त के यहाँ से एक अश्वारोही अपनी तलबार उल्टे ढंग से पकड़कर आ पहुँचा। अपने घोड़े को रोककर बोला, ''आप सब लोग सावधानी से सुनिये, मैं महाराजा जितकेतु के मंत्री जीवगुप्त के यहाँ से एक ख़ास संदेशा लेकर आया हूँ।''

''ओह ! इसलिए तुम तलबार उल्टे पकड़ लिये हो! वाह! बड़ी अच्छी बात है! सुनाओ, वह संदेशा क्या है?'' कालीबर्मा ने पूछा।

''महामंत्री यहाँ पर उपस्थित नगर के प्रधान बधिक को तत्काल अपने समक्ष हाज़िर होने का आदेश दे रहे हैं। साथ ही राजा के द्वारा दिये गये शिरच्छेद के दण्ड से बचकर घूमनेवाले कालीबर्मा

नामक अपराधी को भी बन्दी बनाकर ले आने का आदेश दिया है।'' मंत्री जीवगुप्त के अश्वारोही ने कहा।

ये बातें सुन भल्लूक मांत्रिक धीरे से हँसकर बोला, ''क्यों बधिक भल्लूक! क्या तुमने मंत्री का आदेश सुन लिया है? तुम क्या करने जा रहे हो?''

बधिक भल्लूक तत्काल कोई निर्णय न कर पाया, दो-तीन पल सिर झुकाकर मौन खड़ा रहा, तब बोला, ''कालीवर्मा साहब, आप की क्या आज्ञा है? इस भल्लूक सिर के साथ मैं चन्द्रशिला नगर जाऊँ तो वहाँ के बच्चों के पत्थरों की मार से अपनी जान ही खो बैठूँगा। मेरे बचने का कोई उपाय कीजिए।''

कालीवर्मा ने अपनी तलवार का बधिक भल्लूक के शरीर से स्पर्श कराकर कहा, ''बधिक भल्लूक! तुम्हारी स्वामिभक्ति प्रशंसनीय है। हमारा पहला काम तो यह होगा कि हम क़िले के अन्दर पहुँचकर माया मर्कट को पकड़ लेंगे, अगर देरी न हुई तो उस राजा दुर्मुख की जान बचायेंगे। राजा जितकेतु की तुलना में राजा दुर्मुख सब तरह से उत्तम व्यक्ति मालूम होता है। अब मंत्री जीवगुप्त के दूत के उत्तर की बात रही। तुम अपने परशु से उसका सिर काटोगे या उसकी तलवार तोड़कर भगा दोगे, यह तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है।''

दूसरे ही क्षण बधिक भल्लूक चिल्ला उठा, ''सिरस भैरव!'' फिर उछलकर दूत पर कूद पड़ा, उसके हाथ से तलवार खींचकर उसके टुकड़े करके दूर फेंक दिया, तब बोला, ''अरे कमबख़्त दूत! मैंने राजा जि तकेतु का नमक खाया, बद ले में बधिक का काम किया, जिससे मेरा ऋ ण चुक गया। मंत्री जीवगुप्त से कह दो कि वह यहाँ से चुपचाप चला जाये, वरना मैं उसका सर सिरस भैरव को बलि चढ़ा दूँगा।''

ये बातें सुन जीवगुप्त का दूत चीख उठा, अपने घोड़े को मोड़कर दौड़ाने को हुआ, तभी क़िले के बंद दर्वाजों की ओर से बड़ी आवाज़ के साथ ये नारे सुनाई दिये, ''कालीवर्मा की जय!''

भल्लूक मांत्रिक के साथ सबने आश्चर्य के साथ सिर उठाकर उस ओर देखा। क़िले के दर्वाजे धू-धू करते जल रहे थे। ***(और है)***

क्रोधी मुनि

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा और उसे कंधे पर डाल लिया। फिर हमेशा की तरह वह श्मसान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन्, श्रम से भरा यह काम तुम निरन्तर करते जा रहे हो। आज तक तुमने जो भी और जितने भी प्रयत्न किये, असफल ही रहे। फिर भी अपनी हार मानने के लिए तुम तैयार नहीं हो। मानता हूँ कि जो लक्ष्य तुम साधना चाहते हो, वह अवश्य ही उदात्त व गंभीर होगा। तुम्हारी इस कठोर साधना को देखते हुए मुझे लगता है कि तुम्हें इस काम के लिए प्रोत्साहित करनेवाला कोई गुरु होगा,

जिसके प्रति तुम्हारी अपार श्रद्धा और भक्ति है। कुछ प्रज्ञावान व्यक्ति समयानुसार जो कहना चाहते हों, वे स्पष्ट रूप से नहीं कहते। उनकी बातों में गहरा रहस्य भरा होता है। वे केवल संकेत मात्र करते हैं। ये संकेत विवेकी ही समझ पाते हैं। उदाहरणस्वरूप एक वृद्ध मुनि की कहानी तुम्हें सुनाऊँगा। अपनी थकावट दूर करते हुए ध्यानपूर्वक सुनो।'' फिर वेताल कहानी यों सुनाने लगाः

बहुत पहले की बात है। जंगल में सुतीव्र नामक एक व्यक्ति घोर तपस्या कर रहा था। दो भील जंगल में घूम रहे थे। वहाँ उनके हाथ कुछ नहीं आया। वे आखिर मुनि के पास पहुँचे। इतने में एक भील बेहोश होकर गिर गया। दूसरे भील की समझ में नहीं आया कि अब क्या किया जाए। उसने मुनि की सहायता मांगी। जब मुनि के मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला तो उसने मुनि को पकड़कर जोर से हिलाया।

मुनि ने क्रोधित होकर आँखें खोलीं और उसे भस्म हो जाने का शाप दिया। बस, देखते-देखते वह भील भस्म में बदल गया। शांत हो जाने के बाद मुनि बेहोश भील को होश में ले आया और जो हुआ, सब कुछ बता चुकने के बाद उससे कहा, ''मैं शाप दे सकता हूँ पर शाप को वापस लेने की शक्ति मुझ में नहीं है। अपने दोस्त के भस्म को सुरक्षित रखो। अपने गुरु से यह ज्ञान लेकर लौटूँगा कि शाप के निराकरण के लिए क्या किया जा सकता है।'' यों कहकर मुनि वहाँ से चला गया।

एक हफ्ते तक यात्रा करने के बाद, एकअन्य जंगल में रहनेवाले अपने गुरुसुशांत से मुनि सुतीव्र मिला। सब सुनने के बाद सुशांत ने कहा, ''शिष्य, कहते हैं कि क्रोध क्रोधी का शत्रु होता है। तुम्हारा क्रोध तुम्हारे तपोबल का हरण कर रहा है। शांति से तुम्हारा भला होगा। शाप देने के बाद, अपना पूरा तपोबल समर्पित करने पर ही, वह भील जीवित होगा।''

अपना दुख प्रकट करते हुए मुनि ने गुरु से कोई दूसरा उपाय बताने की विनती की। तब सुशांत ने कहा, ''विष्णुपुर में माधव नामक एक साधारण गृहस्थ रहता है। वह अपने पुण्य के एक भाग को दान में दे तो भील जीवित हो सकता है। तुम उससे मिलो।''

सुतीव्र तुरंत विष्णुपुर जाने के लिए निकल पड़ा। रास्ते में उसने कुछ युवतियों को वनविहार करते हुए देखा। उनमें से एक युवती अद्भुत सुंदरी थी। सुतीव्र थोडी देर तक उसके सौंदर्य को आश्चर्य भरे नेत्रों से देखता रहा।

सुतीव्र की गाढ़ी दाढ़ी और उसकी पैनी दृष्टि को देखते हुए नाराज़ होती हुई उस युवती ने कहा, ''तुम तो तपस्वी होकर भी मेरी सुंदरता पर मुग्ध होकर एकटक देखते जा रहे हो। क्या यह तुम्हें शोभा देता है?''

उसकी बातों पर मुनि नाराज़ हो उठा और उसने यह शाप दे दिया, ''अपने सौंदर्य पर तुम्हें गर्व है। इसी क्षण वह सौंदर्य तुमसे छिन जायेगा और तुम बदसूरत हो जाओगी।'' यह युवती तुरंत कुरूपिणी हो गयी और अपनी दुर्गति पर फूट-फूटकर रोने लगी। सुतीव्र विष्णुपर पहुँचा। रास्ते में उसे एक युवक दिखायी पड़ा ।

उसने उससे पूछा, ''बता सकते हो, माधव का घर कहाँ है?'' उस युवक ने मुनि को नख से शिख तक देखा और कहा, ''माधव की पुत्री बड़ी ही सुंदरी है। मैं उससे प्रेम करता हूँ। सुनने में आया है कि मुनि जैसे महान व्यक्ति भी तपस्या छोड़कर उससे विवाह रचाने के लिए उतावले रहते हैं। अगर तुम भी उसी प्रकार के मुनियों में से एक हो तो मैं तुम्हारी हत्या करने से भी नहीं झिझकूँगा।''

सुतीव्र आग-बबूला हो उठा और उसे गूँगा हो जाने का शाप दिया। आखिर वह माधव के घर पहुँच ही गया। उस समय माधव घर के चबूतरे पर बैठा हुआ था। उसने बडे प्यार से सुतीव्र

हूँ। घर के और बाहर के काम भी करता हूँ। यथासंभव दूसरों की मदद करता हूँ। फ़ुरसत मिलने पर अच्छे ग्रंथों का पठन करता हूँ। समय पर सोता हूँ। क्रोध, आवेश और उद्रेक से बचने के लिए मन को प्रशांत रखता हूँ।''

उसकी दिनचर्या में देवपूजा और ध्यान मग्नता के अभाव को देखते हुए सुतीव्र ने आश्चर्य-भरे स्वर में पूछा, ''दिन में एक बार ही सही, क्या आप भगवान का स्मरण नहीं करते?''

''भगवान कहीं औ र कहाँ हैं? जो भगवान मुझमें और मुझ जैसे मनुष्यों में विद्यमान हैं, उनकी अलग पूजा करने की क्या आवश्यकता है? हम दूसरों का भला करेंगे, संतुष्ट रहेंगे तो वही देव प्रार्थना है, पूजा है, तपस्या है,'' माधव ने सरल शैली में बताया।

से पूछा। ''सुशांत मुनि सकुशल हैं न?''

सुतीव्र ने उसे प्रणाम किया और कहा, ''गुरु सुशांत ने कहा कि आप महान पुण्यात्मा हैं। आपके दर्शन पाकर मेरा जन्म सफल हुआ। इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ।''

इतने में, अंदर से एक सुंदर युवती आयी और उसके सामने उसने एक छोटी-सी चटाई बिछा दी। सुतीव्र को एक बार देखा और हाथ जोड़कर नमस्कार करके चली गयी। माधव कच्ची सुपारी काटने में मग्न था।

सुतीव्र यह जानने के लिए उतावला था कि माधव ने कौन-से वे महान कार्य किये, जिनके कारण उसके गुरु उसे पुण्यात्मा मानते हैं। उत्तर में माधव ने कहा, ''सबेरे ही उठता हूँ। यथासंभव स्वच्छ व साफ़-सुथरा रहने की कोशिश करता

यह सुनते ही सुतीव्र क्रोधित हो उठा और कहा, ''तुम मेरी हँसी उड़ा रहे हो। तुम्हारे कहने का यही मतलब है न कि मेरी तपस्या व्यर्थ है।''

''महाशय, मैंने अपने बारे में कहा। आपके बारे में कुछ नहीं कहा। जहाँ तक मेरी समझ है, मेरा मानना है कि तपस्या करना व्यर्थ है।''

सुतीव्र और नाराज़ होते हुए बोला, ''तुम जैसे नास्तिक को माफ़ करना नहीं चाहिये। इस क्षण से तुम चल-फिर नहीं पाओगे, तुम्हारी दृष्टि कमज़ोर पड़ जायेगी और रोगी होकर खाट पर पड़े रहोगे।''

पर, माधव पर सुतीव्र के शाप का कोई असर नहीं पड़ा। सुपारी काटने का काम यथावत् करते

हुए उसने कहा, ''महोदय, आप तपोधनी हैं। आप जैसों को मैंने नाराज़ किया, यह मेरी ग़लती है। कृपया अपना क्रोध कम कीजिये। देखते-देखते भला कोई परिवर्तित कैसे हो जायेगा?''

सुतीव्र भौचक्का रह गया। दुखी होते हुए उसने कहा, ''मेरे शाप ने तुम पर कोई प्रभाव नहीं डाला। लगता है कि तुम मुझसे अधिक महान हो।''

''नहीं, स्वामी, नहीं। जो ग़लती करते हैं, उन्हें अपने तपोबल के आधारपर आप दंड देना चाहते हैं। इसी कारण आपका तपोबल घट जाता है। आपने एक भील को शाप देकर भस्म बना ड़ाला। एक सुंदरी को कुरूपिणी बना ड़ाला। एक युवक को गूँगा बना दिया। इस वजह से आपका पूरा तपोबल नहीं के बराबर रह गया। अब एक असली बात आपसे बताना चाहूँगा। ऐसे शापग्रस्तों को शाप से विमुक्त करने के लिए मुझ जैसे व्यक्ति का पुण्य मांगने यहाँ आये हैं। जब तक आपकी इच्छा पूरी नहीं होगी तब तक कोई भी शाप मुझपर असर नहीं दिखायेगा। अब आपकी इच्छा पूरी हो गयी। आपने जिन-जिन को शाप दिया, वे सब अब सामान्य मनुष्य हो गये। अब आप चाहें तो मुझे शाप दीजिये और अपनी तपोशक्ति की परीक्षा कर लीजिये।'' माधव ने विनयपूर्वक कहा।

सुतीव्र ने, माधव को शाप नहीं दिया। जब वह वापस लौटने लगा तब उसने देखा कि उसके शाप दिये गये सभी लोग जैसे के जैसे हैं तो उसे आश्चर्य हुआ। अपने गुरु सुशांत से मिलकर उसने पूछा कि ऐसा क्यों हुआ?

सुशांत ने कहा, ''तपोशक्ति अवश्य ही महान है। परंतु, अनुशासन का पालन करनेवाले, अपनी जिम्मेदारियों को निभानेवाले तथा परोपकार में रत मनुष्य का पुण्य तुम जैसे क्रोधी तपस्वी के तपोबल से महान है। सामान्य मनुष्य पुण्यवान हो तो भी उसमें शाप देने की शक्ति नहीं होती, इसलिए उससे दूसरों को हानि नहीं होती।''

''परंतु माधव ने शापग्रस्तों की रक्षा करने के लिए अपना पुण्य दान में दे दिया। जो पुण्य उन्होंने खो दिया, उसकी पुनः प्राप्ति के लिए उन्हें कितना समय लगेगा।'' सुतीव्र ने पूछा।

उसके इस प्रश्न पर सुशांत ने मुस्कुराते हुए कहा, ''किसी की ग़लती को सुधारने के लिए अपने पुण्य का दान कर देना बहुत बड़ा पुण्य है। इसलिए, तुम्हारे कारण माधव का पुण्य और

अधिक हो गया। उन्हें अपने पुण्य का दान करना पड़ा, अतः तुम्हारा पाप और अधिक हो गया।''

सुतीव्र ने तुरंत वहाँ से निकलते हुए कहा, ''गुरुदेव, जो तपोशक्ति मैंने खो दी, जिस पाप से मैं घिर गया हूँ, उसका परिहार करने अभी मैं पूर्व स्थान पर लौटूँगा और फिर से तपर- या शुरू करूँगा।''

बेताल ने यह कहानी सुना चुकने के बाद कहा, ''राजन्, सुशांत ने सुतीव्र के प्रश्नों के जो उत्तर दिये, उनमें इस बात का संकेतहै कि तपस्य के द्वारा भगवान की कृपा पाने की चेष्टा बिल्कुल व्यर्थ है। इसी कारण सुशांत ने, सुतीव्र को पुण्यवान गृहस्थी माधव के पास भेजा। वहाँ उसने देखा कि जिस माधव ने तपस्या की ही नहीं, उसमें अद्भुत शक्तियाँ भरी पड़ी हैं। यह जानकर भी तपस्या करने उसका जाना असंगत व अटपटा लगता है। सुशांत अगर सुतीव्र को स्पष्ट रूप से कह देते कि तुम तपस्या करने के योग्य नहीं हो, गृहस्थ बनो, तो अच्छा होता। और बात सुतीव्र की समझ में आसानी से आ जाती। मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े - टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने उसके संदेहों को दूर करने के उद्देश्य से कहा, ''सुतीव्र का गुण मुख्यतया तामस गुण है। ऐसे लोग तपस्या करने के योग्य ही नहीं होते, साथ ही उतार-चढ़ावों से भरे गृहस्थ जीवन बिताने में भी असमर्थ होते हैं। सुतीव्र ने, माधव के साथ जो व्यवहार किया, उसे सुनने के बाद, सुशांत को उसे यह आदेश देना सही नहीं लगा कि वह गृहस्थाश्रम स्वीकार करे। इसीलिए, केवल संकेत मात्र देकर निर्णय लेने की जिम्मेदारी उसी पर छोड़ दी। सुतीव्र पहले अहंकारी व क्रोधी था, पर अपने अनुभव से उसने सीख लिया कि वे उसे किस हद तक हानि पहुँचा सकते हैं। अहंकार, क्रोध, तामस गुण अब उससे हट गये और उसमें सात्विक गुणों ने प्रवेश किया।इसीलिए वह फिर से तपस्या करने निकल पड़ा।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधारः सरस्वती की रचना)

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ो :

राजा राजाराज वर्मा ने गाँव के पहरेदार को एक कुख्यात डाकू को पकड़ने के लिए इनाम में सोने की एक अंगूठी दी। कुछ दिनों के बाद एक अवकाशप्राप्त अध्यापक ने एक गुण्डे को एक छोटे बच्चे के गले से चाँदी की एक जंजीर झपटते हुए देखा। वह "चोर! चोर!" चिल्लाने लगा। राहगीरों ने उसे पकड़ लिया। राजा ने आध्यापक को इनाम में हीरे का एक हार दिया।

दूसरे दिन एक दरबारी ने राजा से पूछा : "महाराज, आपने पहरेदार को केवल एक अंगूठी दी हालाँकि उसने एक कुख्यात डाकू को पकड़ा था। आपने अध्यापक को इनाम में हीरे का एक हार दिया, लेकिन उसने एक गुण्डे को पकड़ने में केवल सहायता की थी। यह भेदभाव क्यों?"

राजा ने अपनी कार्रवाई के समर्थन में क्या कहा?

- क्या राजा ने पहरेदार और अध्यापक के बीच सचमुच भेदभाव किया?
- क्या राजा ने डाकू और गुण्डे के बीच कोई फर्क समझा?

अपनी प्रतिक्रिया १००-१५० शब्दों में लिखो और कहानी को एक उपयुक्त शीर्षक दो। निम्नलिखित कूपन के साथ लिफाफे में उसे भेज दो। लिफाफे पर लिखा होना चाहिये- "पढ़ो और अपनी प्रतिक्रिया दो।"

अन्तिम तिथिः ३० नवम्बर २००४

नाम --उम्र-----------जन्मतिथि----------------------

विद्यालय ---कक्षा-----------

घर का पता --

--पिनकोड----------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर   प्रतियोगी के हस्ताक्षर

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

अन्य देशों की जनश्रुत कथाएँ (फ्राँस)

सातवें दिन

दो हजार से कुछ अधिक वर्ष पूर्व ब्रिटैनी नगर के सबसे दूर वाले छोर पर स्थित एक पहाड़ी पर एक मनोरम महल था। पहाडी के उस पार समुद्र था, जिसमें आधी जल-मग्न काली चट्टानें थीं। उनमें से कुछ बादलों की ओर संकेत करती हुई विशाल तलवारों के समान दिखाई पड़ती थीं और कुछ बडी-बडी गदाओं के समान लगती थीं। कभी-कभी तूफानी रात में उन चट्टानों से टकरा कर कोई न कोई जलपोत ध्वस्त हो जाया करता था।

डोरीज़न नाम की एक सुन्दर युवा स्त्री महल के झरोखे से घण्टों लगातार विशाल समुद्र को निहारती रहती। तब वह एक आह भर कर वहाँ से उठ कर चली जाती, पर कुछ ही देर बाद फिर वहीं लौट आती।

क्या उसे समुद्र से प्रेम था? बल्कि वह समुद्र से भयभीत थी - खास कर उसके खतरनाक तट से। साहसिक यात्रा का प्रेमी उसका पति आर्वर किसी दूरस्थ द्वीप की समुद्री यात्रा पर गया था। उसे भय था कि तट पर उसका पोत मार्ग भटक कर कहीं जल- मग्न चट्टानों से टकरा न जाये।

यद्यपि उसके पति के वापस आने में अधिक से अधिक एक वर्ष तक लग जाने की आशा थी किन्तु दो वर्ष के बाद भी कोई समाचार नहीं मिला। लोगों ने अनुमान लगाया कि आर्वर और उसके साथी पोतध्वंस के कारण समुद्र में विलीन हो गये अथवा किसी द्वीप में डाकुओं के हाथ या जल दस्युओं द्वारा मार दिये गये होंगे।

डोरीज़न के विवाह से पूर्व उसके साथ कभी विवाह का प्रस्ताव करने वाले एक धनी युवक, ऑरेलियस ने, क्योंकि आर्वर अब नहीं था, पुनः अपना प्रस्ताव रखा और बार-बार अनुरोध कर

बिवाह के लिए दबाव डाला। डॉरीज़न उससे घृणा करती थी लेकिन वह कुलीन वंश का एक प्रभावशाली युवक था, इसलिए मर्यादा की सीमा लांघ कर उसके साथ कठोर नहीं हो सकती थी।

"मेरी प्रिय डॉरीज़न, मैं तुम्हारे लिए सब कुछ छोड़ सकता हूँ, मैं तुम्हारे लिए सब कुछ कर सकता हूँ, केवल यदि तुम मुझसे बिवाह के लिए राजी हो जाओ," एक दिन ऑरिलियस ने मन्दिर में खड़ी डॉरीजन से कहा। स्त्री युवक को हमेशा के लिए इस तरह डपट देना चाहती थी कि वह भविष्य में कभी उसे अपना चेहरा न दिखा सके।

"अच्छ तो मि.ऑरिलियस, मुझसे शादी करने के लिए तुम सब कुछ कर सकते हो न? तो तुम क्या तट पर पड़ी जल-मग्न चट्टानों को हटा सकते हो?" डॉरीजन ने पूछा।

"क्यों नहीं? " ऑरिलियस ने बड़े उत्साहपूर्बक उत्तर दिया। "लेकिन बचन दो कि इस करतब के बाद एक सप्ताह के अन्दर तुम मेरे साथ विवाह कर लोगी," उसने कहा।

"मैं बचन देती हूँ", डॉरीजन ने झंझट को टालने के ख्याल से कह दिया।

"प्रसंगवश मैं यह कह दूँ कि शायद तुम्हें यह याद दिलाने की आवश्यकता नहीं होगी कि मन्दिर में जो भी बचन दिया गया है, उसका पालन अवश्य किया जाना चाहिये। अन्यथा बचनभंग करनेबाले के परिवार के सभी सदस्य शाश्वत नरक की यातना झेलेंगे। यहाँ तक कि उनके पूर्वजों की भी यही नियति होगी।" ऑरिलियस ने चेतावनी दी। डोरीज़न उस इलाके के इन अंधविश्वासों को भूल चुकी थी। कुछ क्षणों के लिए वह बेचैन हो गई। लेकिन जब उसे यह याद आया कि उसकी शर्त को कोई मनुष्य पूरा नहीं कर सकता, तब वह मुस्कुराई और चल पड़ी।

लेकिन ऑरिलियस के चेहरे की मुस्कुराहट गायब हो गई। वह इस असम्भव को कैसे कर पायेगा ! वह सोचता रहा और सिर खुजलाता रहा। उसने अपने बिश्वासपात्रों के साथ बिचार-बिमर्श किया।

उसका एक मित्र अभिचार करना जानता था। उससे यह पता चला कि एक हजार मील की दूरी पर एक गुफा में एक जादूगर रहता है। ऑरिलियस कई दिनों तक घोड़ा गाड़ी हाँककर उससे मिलने गया और उसे ब्रिटैनी ले आया। जादूगर ने समुद्र-तट का सर्वेक्षण किया और कहा, "मैं केवल ऐसी

माया का सृजन कर सकता हूँ कि ये चट्टानें सात दिनों तक दिखाई न दें।''

''अति उत्तम! इससे मेरा उद्देश्य पूरा हो जायेगा।'' ऑरेलियस खुशी से चिल्लाया। जादूगर ने कुछ मंत्र-तन्त्र किया और सचमुच वे दैत्याकार शिलाएँ गायब हो गईं, ऐसा लगने लगा।

ऑरेलियस पहाड़ी पर गया और उसने डॉरीजन को पुकारा। उसकी पुकार सुन कर आर्बर बाहर आया। जब ऑरेलियस जादूगर को लाने गया था, तभी आर्बर वापस आ गया था।

''हेलो, मेरे दोस्त ऑरेलियस, कैसे हो? मैंने सुना कि चट्टानों को हटा देने का तुमने वचन दिया है। यह अच्छा मज़ाक था। यह तुम्हारी मेहरबानी थी कि तुमने मेरी लम्बी गैरहाजिरी में डॉरीजन को कुछ राहत की सांस दी।'' आर्बर ने कहा और अपने महल के अन्दर आकर विश्राम करने के लिए बुलाया।

''मजाक से तुम्हारा क्या तात्पर्य है? समुद्र की ओर देखो!'' ऑरेलियस गंभीर होकर बोला।

तब तक डॉरीजन भी वहाँ पहुँच गई थी। दोनों ने समुद्र-तट की ओर देखा। वे यह देख कर हैरान हो गये कि चट्टानें गायब थीं और उनका नामोनिशान तक न था। वे पीले पड़ गये। डोरीज़न निश्चेत हो गई। किन्तु जैसे ही उसकी चेतना वापस आई, ऑरेलियस ने विवाह करने का दावा किया क्योंकि वादा के अनुसार उसने असम्भव कार्य को करके दिखा दिया था।

''आह प्रिय डोरीज़न, सत्य के प्रति दायित्व अपने जीवन से कहीं अधिक मूल्यवान है। मैं नहीं चाहूँगा कि हमारे वचनभंग के कारण हमारे पूर्वजों की आत्माएँ भी नरक की यातनाएँ झेलें,'' आर्बर ने गंभीरतापूर्वक कहा।

डोरीज़न निष्प्राण मूर्तिवत् खड़ी रही। तब फिर अपने आप को संभालने हुए उसने कहा, ''मैंने चट्टानों के हट जाने के बाद सात दिनों के अन्दर तुमसे विवाह करने का वादा किया है। मैं सातवें दिन ही ऐसा करूँगी, एक दिन भी पहले नहीं।'' ऑरेलियस उसके इस निर्णय पर आपत्ति नहीं कर सका, क्योंकि, उसने सोचा, जादू की माया का प्रभाव आखिर सात दिनों तक तो रहेगा ही।

कुछ दिनों से आकाश में बादल मंडरा रहे थे।

ऐसा लगा मानों सातवें दिन सभी बादल एक साथ मिल कर एक भयानक तूफ़ान के साथ टूट पड़ेंगे। घर से बाहर मार्ग पर कोई मनुष्य दिखाई न पड़ा; केवल प्रकृति का प्रकोप वृक्षों, खम्भों, गाड़ियों और क्या नहीं, सबको झकझोरता रहा। किसी मन्दिर में विवाह संस्कार के लिए किसी पुजारी के मिलने का तो प्रश्न ही नहीं था। इसलिए ऑरेलियस ने अपनी 'दुल्हन' को लाने के लिए बाहर मार्ग पर आने की अनेक बार कोशिश की, लेकिन तूफ़ान ने उसकी घोड़ा गाड़ी उलट दी। उसके घोड़े भयातुर हो भाग गये।

इस प्रकार सातवाँ दिन बीत गया। दूसरे दिन आकाश थोड़ा साफ था और ऑरेलियस, जो चट्टानों के पुनः दृष्टिगोचर होने से पूर्व डोरीज़न को अब भी मन्दिर ले जाकर विवाह करने की आशा संजाये था, महल के सामने आया।

डोरीजन तैयार थी। आर्बर ने आँसुओं से भीगी विदाई दी। डोरीज़न सचमुच भवन से बाहर खुले प्रांगण में आ गई। लेकिन ऑरेलियस बहुत घबराया हुआ लग रहा था। डोरीज़न और आर्बर की सच्चाई की शक्ति प्रसारित होने से पहले ही वह काँपने लगा, क्योंकि उसने झूठ का सहारा लिया था; चट्टानें वास्तव में हटाई नहीं गई थीं।

तभी आकाश में बिजली एक बार फिर चमकी और वज्रपात की भयंकर आवाज से तट काँप उठा। सब की नजरें तट की दिशा में मुड़ गईं। और देखो! चट्टानें वैसी ही थीं जैसे वे हजारों साल से पड़ी थीं; माया खत्म हो चुकी थी।

ऑरेलियस अचेत हो गया। आर्बर और डोरीज़न ने अपने सेवकों को बुला कर उसकी देखभाल की। जब वह होश में आया, उसने आर्बर और डॉरीज़न से झुक कर क्षमा मांगी, "मुझे माफ कर दो, इस पापी को माफ कर दो!"

वह फूट-फूट कर रो पड़ा और वहाँ से चला गया। उसे फिर किसी ने ब्रिटैनी में नहीं देखा।

(एम.डी.)

समाचार झलक

दिल्ली की पाठ्य पुस्तकों में सचिन

केन्द्र-शासित दिल्ली क्षेत्र के सभी सरकारी विद्यालयों में दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के छात्रों को इस शैक्षिक वर्ष से पाठ्य क्रम के रूप में भारत के मास्टर बल्लेबाज सचिन तेन्दुलकर का जीवन-चरित पढ़ाया जायेगा। पाठ एक साक्षात्कार के रूप में है जिसमें क्रिकेट का खिलाड़ी अपने जीवन के युगान्तरकारी घटनाओं की चर्चा करता है। यह पूछे जाने पर कि उसकी सफलता के क्या कारण हैं, उसने कहा कि ये हैं उसकी महत्वाकांक्षा, निरन्तर अभ्यास तथा क्षिप्र समझ।

कूड़े का उच्चतम ढेर

एवरेस्ट विश्व का उच्चतम शिखर है। है न? जो भी हो, अगले १० या १५ वर्षों में क्विज़ मास्टर इसे 'गलत' बता सकता है यदि ५१ वर्ष पूर्व ऐडमण्ड हिलैरी के साथ पहली बार उस शिखर पर पहुँचने वाले तेनजिंग नॉरगे के बेटे जैमलिंग नॉरगे की बातों पर विश्वास करें। एवरेस्ट के विजेताओं से आनेवाली रिपोर्ट के अनुसार यह पर्वत-शिखर धीरे-धीरे कूड़ों का उच्चतम ढेर बनता जा रहा है। जैमलिंग के अनुसार इन कूड़ों में बचे-खुचे भोजन, तम्बू, कागज़ तथा प्लास्टिक के कप, प्लास्टिक बैग्स, टूटे लट्ठे, खाली बोतलें तथा मानव विष्ठा शामिल होते हैं। वास्तविक शिखर लगभग २०० वर्गफुट की चकती है जहाँ पर एक बार में २० से ३० व्यक्ति तक आ सकते हैं। समय आ गया है जब हवाई अड्डों की तरह आरोहियों की जाँच की जानी चाहिये और खाली हाथ ही उन्हें ऊपर जाने की की अनुमति दी जानी चाहिये।

चम्पन का कथा-देश

एक समय एक जंगल में चम्पन नाम का एक खरगोश रहता था। उसे अपने घर के पास पेड़ के नीचे बैठ कर कहानी पढ़ना बहुत पसन्द था। वह बहुत ईमानदार, दयालु और चतुर था। बहुत सारे पशु-पक्षी उसकी कहानियाँ सुनने के लिए इकट्ठे हो जाते थे।

जिस दिन से खरगोश ने पशु-पक्षियों को कहानी सुनाना शुरू किया उस दिन से जंगल के राजा सिंह का दरबार खाली हो गया। लोमड़ियाँ और भेड़िये खरगोश से जलते थे, इसलिए वे उसके पास नहीं जाते थे।

एक दिन सवेरे सवेरे सिंह जंगल में घूम रहा था। उसने खरगोश को एक चिड़िया को कहानी सुनाते हुए देखा। कहानी खत्म होने पर चिड़िया पेड़ पर वापस चली गई और खरगोश अपने घर के अन्दर चला गया। सिंह को कोई जानकारी नहीं थी, इसलिए उसने चिड़िया से पूछा। चिड़िया ने उसे सब कुछ बता दिया। सिंह को यह जान कर

बहुत क्रोध आया कि सिर्फ कहानी सुनने के लिए पशुओं ने दरबार छोड़ दिया। वह लोमड़ियों और भेड़ियों के नेताओं के पास गया और पशुओं को वापस लाने में उनकी सहायता माँगी। उन सब ने खरगोश को मारने की योजना बनाई।

सिंह ने साधु का वेश बना लिया और भेड़ियों को यह खबर फैलाने के लिए कहा कि साधु खरगोश को उसके सुनहले भविष्य के लिए आशीर्वाद देने हेतु बुलाना चाहते हैं । बन्दर ने खरगोश को यह सन्देश दिया। जब खरगोश तैयार हो रहा था, चिड़िया तुरन्त उड़कर उसे सावधान करने आई कि सिंह उसे मारने की योजना बना रहा है। तभी एक भेड़िया उसका दरवाजा खटखटाने लगा। खरगोश ने कहा, "मैं कल आऊँगा क्योंकि अभी अन्धेरा हो गया है।" चिड़िया ने सभी जानवरों को सुबह तक जंगल छोड़ देने के लिए कहा। सभी जानवर दूसरे जंगल में चले गये। वहाँ खरगोश राजा बन गया। इसलिए वह जंगल चम्पन के कथा-देश के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

स्निग्धा पटेल,
नवी मुम्बई

वर्षों बीत गये। चम्पन के दो बेटे हुए - चाकू तथा चालू। वे पिता के समान ही गुणवान थे, लेकिन

सायन चन्दा
कोलकाता

बहुत चतुर थे। पिता ने सिंह के बारे में उन्हें जो कुछ बताया था, वह सब उन्हें याद था। एक दिन एक सिंह शावक उनके साथ खेलने आया। वे पिता को बताने के लिए दौड़ कर घर गये। ''डैडी, आज हमारे साथ खेलने के लिए एक शावक आया। मैं समझता हूँ कि वह उसी सिंह का बच्चा है जिसके बारे में आपने हमलोगों को बताया था। हो सकता है वह हमलोगों पर आक्रमण करे।'' ''नहीं मेरे बच्चे,'' चम्पन ने कहा, ''वह बूढ़ा हो गया है, इसलिए वह लड़ाई नहीं कर सकता।''

अगले दिन सिंह और उसका शावक उन पर आक्रमण करने आ गये। शावक नहीं जानता था कि उसके दोस्त उसके पिता के दुश्मन हैं। उसे पिता पर क्रोध आ गया और उसने फैसला किया कि वह पिता के साथ घर वापस नहीं जायेगा। सिंह अपने आप पर शर्मिन्दा होकर चला गया। जब चम्पन घर पर पहुँचा तब सिंह शावक ने उसे अपने फैसले के बारे में बता दिया।

बहुत दिनों तक सिंह ने किसी से लड़ाई नहीं की, क्योंकि उसका बेटा उसके दुश्मनों के साथ था। शीघ्र ही उसने अपनी गलती महसूस की। वह चम्पन के कथा-देश में गया और बोला, ''क्या मैं तुम्हारा दोस्त बन सकता हूँ और तुम्हारे साथ रहकर तुम्हारी कहानियाँ सुन सकता हूँ?'' चम्पन मान गया। और वे उसके बाद सदा आनन्दपूर्वक रहने लगे।

एक्ज़क्यूटिव (होटल को फोन करता है) : ''कृपया मेरी ऑफिस में एक पूरा खाना भेज दो।''
होटल मैनेजर : ''खेद है सर, हम लोग ऑफिस में खाना डिलिवर नहीं करते।''
एक्ज़क्यूटिव : ''क्यों?''
होटल मैनेजर : हम लोग केवल 'होम डिलिवरी' करते हैं। *- आर. राघवेन्द्रन (१२), चेन्नई*

जज : तुम दो में से एक चुन लो। जेल में १० दिन या पाँच हजार रुपये।
प्रतिवादी : कितना शानदार विकल्प है। मैं रुपये लूँगा। *- सेसिल डी क्रुज (१०), मुम्बई*

खाना – दूरदर्शन के बिना

नन्दिता मेनन,
दिल्ली

"साहिल, रात के खाने में क्या-क्या खाओगे?" मिसेज मेहरा ने अपने ११वर्षीय बेटे से पूछा।

"कुछ भी!" साहिल ने बिना नजर हटाये जवाब दिया। टी.वी.के पर्दे पर नज़र गड़ाये वह दोपहर का भोजन कर रहा था।

मिसेज मेहरा उदास थी। उसका बेटा पढ़ने में तेज था। खेलकूद में भी वह अच्छा था। लेकिन उसमें एक कमी थी। घर पर वह बिना टी.वी.देखे खाना नहीं खा सकता था। बिस्किट खाना हो तब भी, टी.वी.चलती रहनी चाहिये। प्रारम्भ में उसके माता-पिता ने इसे अनदेखा किया। बाद में, मना कर तथा डाँट-डपट कर, दोनों तरह से उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन साहिल अपने आप को बदल नहीं सका।

स्कूल में वह एक-दो सैंडबिच खा लेता, वह भी फुटबॉल खेलते समय।

एक दिन जब साहिल के पिता शाम को अपने कार्यालय से विलम्ब से घर लौटे, उन्होंने अपने बेटे को हमेशा की तरह टी.वी. के सामने बैठकर खाना खाते देखा। साहिल को यह भी पता नहीं चला कि उसके पिता आ गये हैं। वह टी.वी.में इतना मग्न था। मि.मेहरा अपने ऊपर काबू न रख पाये। उनके मन में एक विचार सूझा। एक टी.वी.मेकैनिक को बुला कर उन्होंने टी.वी. का तार अलग करवा दिया।

दूसरे दिन जब साहिल स्कूल से वापस लौटा और खाना खाने बैठा तो वह यह देख कर हैरान-परेशान हो गया कि टी.वी. नहीं काम रही है। उसने रिमोट, प्लग, स्विच, इन सबको छेड़छाड़ कर देखा, लेकिन कुछ फर्क नहीं पड़ा। "मुझे भूख नहीं है," उसने माँ से कहा।

शाम को जब साहिल खेल कर घर लौटा तब उसे बहुत भूख लगी हुई थी। लेकिन खाना, दूरदर्शन के बिना, उसकी सोच के बाहर था। जब उसके पिता शाम को ऑफिस से घर लौटे तो उसने उन्हें बताया

देवी प्रसन्ना बहेरा
मयूरभंज

कि टी.वी.नहीं चल रही है। मि.मेहरा ने कहा कि "आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है, कल देखेंगे।"

"यह कैसे हो सकता है? आप जानते हैं कि मैं टी.वी.के बिना खाना नहीं खा सकता। मैंने दोपहर का खाना इसलिए नहीं खाया कि टी.वी.काम नहीं कर रही थी। अभी मुझे बहुत भूख लगी है, लेकिन कैसे खाऊँ?"

"यदि तुम्हें भूख लगी है तो जाओ, खाना खाओ। मैं आज टी.वी.की मरम्मत के लिए कहीं नहीं जाऊँगा और यह मेरा आखिरी फैसला है!" मि.मेहरा चिल्ला कर बोले।

साहिल ने सहायता के लिए माँ की ओर देखा। लेकिन वह केवल चु पचाप कमरे से बाहर चली गई।

साहिल, खिन्न और उदास, घर में इधर-उधर घूमतारहा। फिर दुखदायी मनोदशा के साथ टेबल पर अपने प्लेट के सामने बैठ गया। एक बार फिर उसने पिता से अनुरोध किया। उसके पिता इस बार सहानुभूति के साथ बोले, "कोशिश करो और खाना खा लो।"

साहिल ने प्लेट पर नजर डाली। उसकी माँ ने भिण्डी, दाल और चपाती बनाई थी। साहिल को कुछ समझ में नहीं आया कि भिण्डी कैसी लगेगी। क्योंकि साहिल खाते समय कभी देखता नहीं था कि क्या खा रहे हैं, उसे पता नहीं होता था सब्जी या दाल का स्वाद कैसा होता है। लेकिन आज जब उसने भिण्डी खाई तो उसे बहुत अच्छी लगी। उसे खाना स्वादिष्ट लगा इसलिए वह भरपेट खाया।

धीरे-धीरे उसे समझ में आने लगा कि बिना टी.वी.देखे भी खाना खाया जा सकता है। इतना ही नहीं, वह अपने माता-पिता से खाते समय अपने स्कूल, दोस्तों तथा अध्यापकों के बारे में भी बातें करने लगा, जो उसकी माँ की हमेशा इच्छा रहती थी।

साहिल अब प्रसन्न था और उसके माता-पिता भी सन्तुष्ट थे।

साहिल तथा उसके माता-पिता, दोनों के लिए यह एक महत्वपूर्ण परिवर्तन था।

कोषाध्यक्ष का पद

के. स्नेहा,
हैदराबाद

विक्रमसेन स्वर्णपुरी का राजा था। अचानक उस राज्य के कोषाध्यक्ष की मृत्यु हो गई। क्योंकि यह महत्वपूर्ण पद था, इसलिए राजा शीघ्र ही इस पद पर किसी को नियुक्त करना चाहता था। पर साथ ही इस पद के लिए एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जिसमें प्रतिभा, सत्यनिष्ठा और पराक्रम हो। इस पद के लिए प्रतिस्पर्धी उम्मीदवारों में से सही व्यक्ति का चुनाव करना राजा को कठिन लग रहा था। अन्त में, उसने यह दायित्व मुख्य मंत्री को सौंप दिया।

सभी उम्मीदवारों की अत्यावधानी पूर्वक जाँच-परख के बाद मुख्य मंत्री ने सुनन्द और विशाल नाम के दो ऐसे व्यक्तियों को चुना जो समान रूप से प्रतिभाशाली, सुविज्ञ और बुद्धिमान थे। लेकिन अन्त में एक का चुनाव करना था। मंत्री ने राजा को उनके नाम अनुशंसित किये और दोनों ने मिलकर दोनों उम्मीवारों में से एक सही व्यक्ति का चुनाव करने की एक योजना बनाई।

तदनुसार राजा ने दोनों उम्मीदवारों को बुलाया और प्रत्येक को स्वर्णमुद्राओं से भरा एक थैला दिया। उन्होंने उनसे कहा, ''प्रत्येक थैले में एक सौ स्वर्ण-मुद्राएँ हैं। इन्हें ले जाओ और हमारे शाही अतिथिशाला में रात को विश्राम करो। कल सवेरे इन सौ स्वर्णमुद्राओं को सही सलामत हमें लौटा दो।''

दोनों अपने -अपने थैले लेकर अतिथिशाला में चले गये। रात्रि में डाकुओं के एक गिरोह ने उन पर आक्रमण कर दिया और उन्हें लूटने का प्रयास

पुनीत जे.हीरेमुत
बंगलोर

किया। सुनन्द और विशाल दोनों ने उनका सामना किया और उन्हें भगा दिया। एक डाकू पकड़ लिया गया जिसे उन्होंने राजा के रक्षकों को सुपुर्द कर दिया।

दूसरे दिन सुनन्द और विशाल दोनों ने राजा के पास जाकर बताया कि कैसे उन्होंने डाकुओं को मार भगाया और स्वर्ण मुद्राओं की रक्षा की। राजा ने उनकी बहादुरी की तारीफ की और अपने कर्मचारियों को दोनों थैलों की स्वर्ण मुद्राओं की गिनती करने का आदेश दिया। सुनन्द के थैले में ठीक एक सौ स्वर्ण मुद्राएं पाई गईं, लेकिन विशाल के थैले में केवल नब्बे स्वर्ण मुद्राएं थीं।

मुख्य मंत्री मुस्कुराये और बोले, ''महाराज, मैं कोषाध्यक्ष के रूप में विशाल की नियुक्ति की अनुशंसा करता हूँ।''

यह सुन कर सुनन्द घबरा गया और बोला, ''यह सरासर अन्याय है महाराज! उसके थैले में केवल नब्बे स्वर्ण मुद्राएँ हैं।''

मुख्य मंत्री पुनः मुस्कुराये और बोले, ''सुनन्द, कोषाध्यक्ष को न केवल बुद्धिमान, प्रतिभाशाली तथा पराक्रमी होना चाहिये, बल्कि ईमानदार भी होना चाहिये। हमलोगों ने जानबूझ कर हरेक थैले में केवल नब्बे मुद्राएँ रखी थीं लेकिन पूरे सौ मुद्राएँ लाने के लिए कहा था। तुमने अतिथिशाला में थैले को खोल कर देखा कि वास्तव में इसमें सौ मुद्राएँ हैं या नहीं और तुम्हें केवल नब्बे मुद्राएँ मिलीं। तुमने पहले ही हमारे कथन पर अविश्वास किया और फिर अपनी ईमानदारी का ढोंग किया। तुमने अपने दस सिक्के डाल कर उसे एक सौ मुद्राएँ बना दीं। विशाल को हम लोगों में एक प्रच्छन्न विश्वास था और उसने हमारे कथन की जाँच करने का कभी प्रयास नहीं किया। इससे उसकी सत्यनिष्ठा झलकती है। अन्य सभी विशेषताओं के साथ-साथ जो तुममें हैं, विशाल में यह अतिरिक्त महत्वपूर्ण गुण भी है।''

सुनन्द चुपचाप वहाँ से चला गया। विशाल को कोषाध्यक्ष के पद पर नियुक्त किया गया। और उसने अपनी पूरी क्षमता से अपने कर्त्तव्य का पालन किया।

सपना या सच्चाई

काव्यश्री भट,
औरंगाबाद

प्रिया तेरह वर्ष की एक लड़की थी। वह अत्यन्त प्रतिभाशालिनी थी। उसे उपन्यास पढ़ने में आनन्द आता था जो वह अपनी चचेरी बहनों से या अपने विद्यालय के पुस्तकालय से लाया करती थी।

प्रिया की वार्षिक परीक्षाएँ समाप्त हो चुकी थीं। वह बहुत प्रफुल्ल थी। उसने अपने विद्यालय के पुस्तकालय से एक उत्तम उपन्यास लाने का निश्चय किया। लेकिन वहाँ इतने रोचक उपन्यास थे कि उनमें से चुनाव करना उसके लिए सचमुच कठिन हो गया। अचानक उसने शेल्फ के कोने में एक पुस्तक देखी। इसका आवरण बड़ा चटकीला था। वह लपक कर गई और उसे उठा लाई। वह गद्गद् और उत्तेजित हो गई। वह तुरन्त घर पहुँची और बिना अधिक देर तक प्रतीक्षा किये पुस्तक लेकर बैठ गई।

धीरे-धीरे नाश्ता चबाती हुई वह पढ़ने लगी। पुस्तक सचमुच बहुत डरावनी थी। अचानक उसकी आँखों के सामने एक ब्लैक होल का चित्र प्रकट हो गया। यह उसे अपनी ओर खींच रहा था। पलक मारते ही वह एक दूसरी दुनिया में चली गई। वहाँ सर्वत्र अन्धकार ही अन्धकार था। वहाँ उसका दम घुटने लगा। उसके चारों ओर विचित्र लोग थे। उनमें कुछ न कुछ शारीरिक ऐब था। कुछ लंगड़े थे तथा कुछेक के हाथ टेढ़े-मेढ़े थे। प्रिया बहुत डर गई।

उसे देख कर एक विचित्र बूढ़ा आदमी उसके पास आया। उसके पास ऑक्सिजन का एक सिलेंडर था। प्रिया ने भागने की कोशिश की लेकिन गिर पड़ी और घुटने में खरोंच आ गई। वह आदमी चिल्ला पड़ा, ''ठहर जाओ छोटी बच्ची, मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ।'' उसने एक अतिरिक्त ऑक्सिजन सि लेंडर निकाला और प्रिया को दे दिया।

बी.शैलेश,
सिकन्दराबाद

पहले तो वह डर गई लेकिन बाद में उसे यह विश्वास हो गया कि वह आदमी सचमुच उसकी मदद करना चाहता है। फिर उसने उसे अपनी कहानी सुनाई। "प्रिया, यह तुम्हारी भविष्य की दुनिया है। तुम २३ वीं शताब्दी में प्रवेश कर गई हो।" बूढ़े ने कहा।

"सचमुच? यह दुनिया इतनी विचित्र क्यों लगती है?"

"हम मानवों ने प्रकृति के विधानों का उल्लंघन किया है। अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए हम वृक्षों को काट कर सीमेण्ट की गगनचुम्बी अट्टालिकाओं का निर्माण करते हैं। हमलोगों ने प्राकृतिक संसाधनों को प्रदूषित कर दिया है। सारे ईंधन भी निःशेष हो गये। प्रगति के नाम पर हमने उद्योगों की स्थापना की जिसने भारी मात्रा में प्रदूषण को बढ़ा दिया। इसने ओज़न की परत के विवर को बड़ा बना दिया है। "ओज़न की परत सूर्यकी पराबैंगनी किरण से मनुष्य तथा पृथ्वी के अन्य प्राणियों की रक्षा किया करती थी। लेकिन अब सूर्य की पराबैंगनी किरण हमें प्रभावित करती है और हम शारीरिक रूप से कुछ न कुछ दोष के साथ जन्म लेते हैं।"

"क्या इस समस्या का कोई समाधान नहीं है?" प्रिया ने उदास होकर पूछा।

"नहीं, अब काफी विलम्ब हो चुका है। हमारा अन्त निकट आ गया है। केवल तुम्हीं मदद कर सकती हो?"

"लेकिन...."प्रिया कुछ और कहने ही जा रही थी कि उसने ज़ोर की आवाज सुनी जो उसे बुला रही थी।

तभी अचानक वह जाग पड़ी और उसने समझा कि उसे नीन्द आ गई थी। उसकी माँ ही उसे बुला रही थी। वह बाथ रूम में अपना चेहरा धोने के लिए गई। उसे यह जान कर आश्चर्य हुआ कि उसके घुटने में सचमुच एक खरोंच है।

तब क्या यह सच्चाई थी? क्या यह भावी संसार की ओर से मनुष्यता को चेतावनी थी? हो सकता है वह यह कभी नहीं जाने! लेकिन अब वह यह तो जानती है कि कैसे विनाश से दुनिया की रक्षा की जा सकती है।

सपने से मिली सीख

-पी. कार्तिकेय,
विजयवाडा

"हे! इसे मत मारो। कुत्ते ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? इसे क्यों पीट रहे हो?" राजू के भाई गोपाल ने पूछा। राजू को कुत्तों और पिल्लों को मारने और उन पर पत्थर फेंकने की आदत थी। चिउरों और तितलियों को पकड़ने तथा उनके पंखों में धागे बाँधने की भी उसकी बुरी आदत थी।

स्कूल में भी राजू अक्सर चिउरों और तितलियों को पकड़ कर अपने रूमाल में रख लेता और उन्हें दम घोट कर मार देता। उसके सहपाठी हमेशा कहते कि कीड़ों को न सताओ।

उसका छोटा भाई गोपाल उसकी हरकतों के बारे में माँ से शिकायत किया करता था। उसकी माँ ने क्रोध में पूछा, "राजू, तुम तितलियों के साथ क्रूरतापूर्वक क्यों खेलते हो? यदि तुम ऐसा ही करते रहे तो तुम्हें कठोर सजा मिलेगी।" राजू हँस पड़ा और बोला, "मम्मी, वे मूर्ख प्राणी हैं। वे मुझे कैसे सज़ा दे सकते हैं?" उसकी माँ ने उत्तर दिया, "हँसो मत। एक दिन तुम्हें भगवान सज़ा देंगे।" फिर भी, राजू ने माँ की बातों पर ध्यान नहीं दिया। उसने कहा, "शुभ रात्रि", और फिर वह सोने चला गया।

अगले दिन सवेरे जब वह उठा, उसने कुछ विचित्र देखा। उसके हाथ गायब थे। अब वह रोने लगा। बहुत मुश्किल से वह उठ पाया। वह रोता हुआ बोला, "मम्मी, मुझे देखो न! क्या हो गया?"

हरिनी वेंकटरामन
चेन्नई

"हे, सचमुच में तुम्हारे हाथ नहीं हैं! वे कहाँ चले गये?" गोपाल आश्चर्य से बोला। "मैंने तुम्हें कितनी बार चेतावनी दी थी कि बिना विचारे क्रूर कर्म न करो। अब तुम अपने आप को देखो। मैं समझता हूँ कि तुम्हें भगवान द्वारा सजा मिल गई है।"

राजू गोपाल की मदद से स्कूल पहुँचा। उसके सहपाठी उसका मजाक उड़ाने लगे और परेशान करने लगे। वह अपना कोई भी काम करने में असमर्थ था। यह उसके लिए बहुत कष्टकारक था। स्कूल से वापस आते समय कुत्तों और पिल्लों ने उसे खदेड़ा। वह किसी प्रकार बचता हुआ कठिनाई से घर पहुँचा। मक्खियों ने भी उसे डराया। वह उन्हें भगाने लायक भी न रहा।

राजू अब उन सभी प्राणियों के बारे में सोचने लगा जिन्हें इसने सताया था। वह अपने आप से बोलने लगा, "आहत होने पर उन्हें कितना कष्ट होता होगा!" तब राजू ने भविष्य में किसी भी प्राणी को हानि नहीं पहुँचाने का दृढ़ निश्चय किया। उसने भगवान के नाम पर कसम खाई। उसने यह माँ को बताया और फिर सो गया। जब वह दूसरे दिन सवेरे उठा तो उसके हाथ सही सलामत थे। "ओह! मेरे हाथ वापस आ गये! मेरे हाथ वापस आ गये!" वह खुशी से चिल्लाने लगा। "राजू, उठो, उठो!"
कोई राजू को हिला रहा था।

उसने आँखें खोलीं। उसके परिवार के सभी सदस्य उत्सुक होकर उसके सामने खड़े थे।

राजू ने सोचा, "यह एक सपना था, सच्चाई नहीं।" उसने राहत की साँस ली। उसने अपने सपने के बारे में अपने माता-पिता को बताया और कहा, "मम्मी, मैंने अपने सपने से एक पाठ सीख लिया है।" उसके माता-पिता बहुत प्रसन्न हुए।

एक भिन्न दृष्टिकोण

तेजल डी.
विडागवे, सतारा

धनराज सेठ एक बड़े शहर का एक बहुत धनी व्यक्ति था। उसका बेटा गुनीराज, 'यथा नाम तथा गुण' के अनुसार बुद्धिमान और गुणवान लड़का था। धनराज चाहता था कि उसका बेटा यह देखे और जाने कि गरीब ग्रामीण कैसे जीवन यापन करते हैं। इसलिए दोनों एक निकटस्थ छोटे गाँव में गये और वे वहाँ एक गरीब परिवार के साथ पाँच दिनों तक ठहरे।

जब वे वापस लौट आये तब सेठ जी ने गुनीराज ने पूछा, ''यात्रा कैसी रही?''

''ओह, यह अद्भुत था पिता जी!'' गुनीराज ने अपना उद्गार प्रकट किया।

''अब तुम्हें मालूम हो गया गरीब लोग कैसे रहते हैं। है न?'' धनराज ने पूछा।

''जी हाँ, अवश्य!'' गुनीराज ने उत्तर दिया।

''बताओ तो, तुमने इस भ्रमण से क्या सीखा?''

''मैंने महसूस किया कि हमारे पास एक कुत्ता है, उनके पास चार हैं। हमारे घर के सामने के उद्यान

देवीप्रसन्ना बहेरा, मयूरभंज

में, एक छोटा सरोवर है, लेकिन उनके निकट एक नदी है। हमारे उद्यान में सुन्दर कृत्रिम प्रकाश है, लेकिन ग्रामीणों के लिए आसमान में तारे हैं। हमारे भवन के चारों ओर हमारी सम्पत्ति की सीमा निर्धारित करने के लिए हाते की दीवार है, किन्तु उनकी सीमा क्षितिज तक जाती है। हमारे रहने का क्षेत्र छोटा और साधारण है पर उनके खेत इतनी दूर तक फैले हैं कि एक दृष्टि में दिखाई नहीं पड़ते। हमारी सेवा करने और हमारे काम करने के लिए कितने नौकर-चाकर हैं। ग्रामीण दूसरों की सेवा करते हैं। अपने खाने के लिए हमें अनाज खरीदना पड़ता है। वे अपनी आवश्यकता भर अनाज स्वयं उपजाते हैं। हमारी रक्षा हमारे घर की दीवारें करती हैं। गाँव में उनके अनेक मित्र कठिनाइयों में उनकी सहायता करते हैं। वे उनकी रक्षा करते हैं और अपनी चिन्ताओं, समस्याओं को परस्पर बाँटते हैं।''

धनराज सेठ यह सुन कर दंग रह गया। उसे अपने बेटे से बिलकुल भिन्न उत्तर की अपेक्षा थी। गुनीराज ने कहा, ''पिता जी, आपने मुझे उनके साथ रहने और स्वयं अनुभव प्राप्त करने के लिए वहाँ ले जाकर सचमुच बहुत अच्छा किया। अब मैं जान गया हूँ कि हमलोग कितने गरीब हैं।''

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम संसार को किस नजरिये से देखते हैं। हमारी आशाएँ और महत्वाकांक्षाएँ हमें सभी सांसारिक सुख और आराम दे सकती हैं। हम जो चाहें खरीद सकते हैं, लेकिन मन की शान्ति नहीं खरीद सकते, जब हमें इसकी जरूरत होती है।

अध्यापक : नेपोलियन का जन्म कब हुआ?
छात्र : उसके अपने जन्मदिन पर ।

- आर. नीतेश राज (१२), बंगलोर

प्रशान्त : क्या जानते हो कि बिबेक को हमारे क्लास का मॉनिटर बनाया गया है?
राजा : ऐसी बात है? तो सी.पी.यू. कौन है?

- जी.एस. अनुश (१०), ओमन

पर्वत पर रहस्य

रोसलिना दास,
मयूरभंज

आर्शिक, अर्नब, स्कॉट तथा सेहनाज़ सभी घबराये हुए थे। आधे घण्टे तक किसी के मुँह से आवाज नहीं निकली। बात बहुत गंभीर थी।

वे ट्रेकिंग के लिए बरमुरा आये थे। पहाड़ी की चोटी पर पहुँचने पर उन्हें एक बड़ा कारखाना दिखाई पड़ा, जिसके चारों ओर सशस्त्र सैनिक पहरा दे रहे थे। थोड़ी दूर और आगे जाने पर उन्हें कुछ बारूद, एक जंग लगी बन्दूक और कुछ कारतूसें मिलीं। जब वे और आगे जाने लगे तब एक हट्टा-कट्टा आदमी उन्हें देख कर चिल्लाने लगा। उसकी चिल्लाहट सुन कर वे जान लेकर भागे। वे पहाड़ी के नीचे अपने तम्बू में बैठे थे और बहुत गंभीर थे। अन्त में अर्नब ने कहा, ''मैं समझता हूँ कि वे आतंकवादी हैं। हमें पुलिस को अवश्य

पुनीत जे. हीरेमुत,
बंगलोर

सूचित करना चाहिये। आजकल आतंकवादी बहुत सक्रिय हो गये हैं। सम्भव है कि बरमुरा जैसे एकान्त स्थान को उन्होंने अपना गुप्त अड्डा बना लिया हो।''

लेकिन आर्शिक, जो चारों में सबसे अधिक तेज था, बोला, ''नहीं, हमें कुछ अधिक सूचना एकत्र करनी चाहिये। जब हम निश्चित रूप से जान जायें कि वे आतंकवादी हैं, तब हम पुलिस को सूचित करेंगे। मेरी एक योजना है। आज रात को स्कॉट, सेहनाज़ तथा मैं, तीनों चोटी पर जायेंगे। अर्नब पहाड़ी के नीचे रहेगा। जब हमें खतरा लगेगा तब हम एक लाल रूमाल गिरा देंगे। तब अर्नब पुलिस को बुला कर ले आयेगा।'' अर्नब पहले अकेले रहने को तैयार न था।किन्तु सेहनाज ने उसे समझा कर मना लिया।

पहाड़ी पर पहले आर्शिक चढ़ा। तब स्कॉट और सेहनाज ऊपर गये। वे चुपचाप कारखाने के फाटक तक गये और छिपते हुए अन्दर चले गये। थोड़ी दूर जाने के बाद उन्हें एक बड़ा खुला मैदान मिला। आर्शिक धीरे से बोला, ''यह निश्चित ही

हेलिपैड होगा।''

जब वे और आगे जाने लगे, एक पहरेदार ने उन्हें देख लिया और वह उनका पीछा करने लगा। ये तीनों एक झाड़ी के पीछे छिप गये। उन लोगों ने उनकी बातचीत सुनी। इसी बीच वे वहाँ से बच निकले।

पहाड़ी के नीचे आते ही वे सीधे निकटतम थाने में गये। इन्सपेक्टर को देखते ही उन्होंने कहा, ''इन्सपेक्टर अंकल, हम लोगों ने आतंकवादियों का एक गिरोह देखा है।''

इन्सपेक्टर हैरान रह गया। वह पहले ही चार बच्चों को इतनी रात गये थाने की ओर आते हुए देख कर चकित था। अब उसे और भी आश्चर्य हुआ। वह हकलाते हुए बोला, ''क....क...कहाँ? कहाँ आतंकवादियों को देखा है?''

आर्शिक ने कहा, ''उन्होंने बरमुरा पहाड़ी पर एक कारखाना लगाया है।'' इन्सपेक्टर उनकी कहानी सुन कर ठठा कर हँस पड़ा।

भयभीत अर्नब सब के कानों में फुसफुसा कर बोला, ''मुझे लगता है कि इन्सपेक्टर उस गिरोह का ही आदमी है। यहाँ से भाग चलते हैं।''

तभी इन्सपेक्टर ने कहा, ''वे आतंकवादी नहीं हैं। सरकार ने पिछले वर्ष वहाँ बन्दूक बनाने का एक कारखाना खोला है। इसे नागरिकों से गुप्त रखा गया है।''

अब इस पर बच्चे हँस पड़े। दिल खोल कर हँस चुकने के बाद इन्सपेक्टर ने बच्चों की पूरी कहानी सुनी और कहा, ''लेकिन तुम सब, बच्चो! सचमुच बहादुर हो। तुमलोग तारीफ के लायक हो।''

अपने तम्बू में लौटते समय स्कॉट ने कहा, ''लेकिन यह घटना हमें हमेशा याद रहेगी।'' इस पर सब हँसने लगे।

जॉन : मैं जो कर सकता हूँ वह हमारे स्कूल में कोई और नहीं कर सकता। मेरे टीचर भी नहीं।

जेरी : वह कौन-सा काम है?

जॉन : मेरी हैंड राइटिंग को पढ़ना।

- जी आर वेंकटेश (१२), जग्गायापेट

यात्री (स्टेशन जाने के मार्ग में) : यदि मैं तुम्हारे खेतों से होकर छोटे रास्ते से जाऊं तो क्या तीन बजे की ट्रेन पकड़ सकता हूँ?

किसान : जरूर, और यदि मेरे कुत्ते ने तुम्हें देख लिया तो इसके पहले की ट्रेन भी पकड़ सकते हो।

रत्नशेखर के संकेत

रत्नशेखर नामक पंडित, प्रशांत नगर के शासक के गुरु थे। उनके गुरुकुल में बहुत से विद्यार्थी शिक्षा पाते थे। जब उनकी शिक्षा पूरी हो जाती थी, तब वे उन्हें उचित वृत्तियों में लग जाने की सलाह देते और उनको बिदा करते थे। जिस विद्यार्थी को वे असाधारण प्रतिभावान मानते थे, उसे राजा के आस्थान में नौकरी करने भेजते थे। ऐसे लोगों को राजा आदरपूर्वक अपने आस्थान में नौकरी दे देते थे।

इसी प्रकार जिन विद्यार्थियों ने उस साल गुरुकुल में शिक्षा पूरी की, उनमें से पांच योग्य विद्यार्थियों को रत्नशेखर ने राजा के पास भेजा। भेजते समय रत्नशेखर ने प्रथम विद्यार्थी को खड़ाऊँ, दूसरे को बेंत, तीसरे को छलनी, चौथे को झाड़ू दिये और पांचवें का सिर मुंडन कराकर भेजा।

जब ये पांचों राज प्रासाद के पास पहुँचे, तब राजा पड़ोसी राजा के निमंत्रण पर उस राज्य में गये हुए थे।

युवराज, प्रधानमंत्री के पर्यवेक्षण में शासन की जिम्मेदारियाँ संभाल रहा था।

रत्नशेखर के भेजे उनके पाँचों शिष्यों ने राजसभा में प्रवेश किया और युवराज को सविनय नमस्कार किया और साथ ही गुरु की भेजी वे वस्तुएँ भी दिखायीं।

युवराज भली-भांति जानता था कि रत्नशेखर के गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त किये पांचों अवश्य ही बुद्धिमान और फुर्तीले होंगे। पर जिन वस्तुओं को लेकर वे आये थे, उन्हें देखते हुए उसकी समझ में नहीं आया कि इन्हें किस प्रकार की नौकरी दी जानी चाहिये। इस वजह से उसने यह जिम्मेदारी प्रधान मंत्री को सौंप दी।

प्रधान मंत्री ने व्यवहार-ज्ञान से संबंधित कुछ सवाल पूछे और उनसे दिये गये जवाबों से वे

चरण तेजा

संतुष्ट हुए। खडाऊँ ले आनेवाले को कोषाधिकारी के पद पर, बेंत ले आनेवाले को कर्मचारियों को शिक्षा प्रदान करने के अधिकारी के पद पर, छलनी लानेवाले को सुरक्षा शाखा के अधिकारी के पद पर, झाड़ू लानेवाले को सेनाधिकारी के पद पर और अंत में सिर मुंडाकर आये स्नातक को उपमंत्री के पद पर नियुक्त किया।

बहुत सोचने के बाद भी युवराज की समझ में नहीं आया कि राजगुरु के शिष्य जो वस्तुएँ ले आये थे, उनके आधार पर प्रधान मंत्री ने उन्हें कैसे इन पदों पर नियुक्त किया। उसे अजीब लगा। उसने विनयपूर्वक प्रधान मंत्री से पूछा, ''मंत्रिवर, शिष्य जो वस्तु ले आये, उनके आधार पर उन्हें उस-उस पद पर आपने कैसे नियुक्त किया? मैंने बहुत सोचा, पर मेरी समझ में नहीं आया। क्या आप कृपया इसपर प्रकाश डालेंगे?''

प्रधान मंत्री ने मुस्कुराते हुए कहा, ''युवराज, सुनो। पहला शिष्य ले आया, खडाऊँ। हम उसे कितना ही क्यों न दबाएँ, वह चुपचाप सह लेता है, विरोध नहीं करता। इसका यह मतलब हुआ कि खडाऊँ विनय और विश्वास के प्रतीक हैं। विनय और विश्वास से भरे ऐसे व्यक्ति को कोषागार में नौकरी दिलाना सब दृष्टियों से अच्छा है। यही गुरुजी का भी उद्देश्य है, इसीलिए उन्होंने उसे खडाऊँ दिये।''

युवराज ने सिर हिलाकर यह व्यक्त किया कि वह समझ गया।

''दूसरा शिष्य बेंत ले आया। बेंत अनुशासन

का प्रतीक है। गुरुजी का अभिप्राय है कि वह कर्मचारियों को सही शिक्षा देने के योग्य है। इसलिए मैंने उसे शिक्षाधिकारी के पद पर नियुक्त किया।

"तीसरा शिष्य ले आया छलनी। छलनी अच्छाई को जाने देती है और बुराई को पकड़ लेती है। गुरुजी ने तद्वारा संकेत दिया है कि वह शिष्य अच्छे व्यक्तियों का आदर करेगा और दुष्टों को बांधे रखेगा। इसीलिए उसे सुरक्षा शाखा सौंपी गयी है।

"झाड़ू क्या काम करता है? हवा की वजह से या किसी और वजह से घर में कूडा-करकट जमा हो जाए तो उसे हटाकर घर को साफ-सुथरा रखता है। शत्रु सैनिक हमारे राज्य में प्रवेश करते हों तो जिस प्रकार से झाड़ू कूडे-करकट को हटाता है, उसी प्रकार वह भी शत्रु-सैनिकों को भगायेगा। झाड़ू देकर भेजने के पीछे गुरुजी का यही संकेत है।" मंत्री ने कहा।

"मंत्रिवर, मैं आपकी प्रशंसा करने के स्तर का नहीं हूँ, पर प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। क्या मैं जान सकता हूँ कि रत्नशेखर ने इनमें से एक का सिर मुंडवाकर क्यों भेजा और इसके पीछे क्या संकेत है? उनका यह काम मुझे बड़ा बिचित्र लग रहा है। फिर भी आपने उसे अपने उपमंत्री के पद पर नियुक्त किया। यह तो मुझे और भी बिचित्र लगता है।" राजकुमार ने बड़े बिनम्र भाव से यह प्रश्न पूछा।

"हाँ, युवराज। पहले मुझे भी यह बिचित्र ही लगा। पर सोचा -बिचारा तो गुरुजी क्या संकेत दे रहे हैं, समझ में आ गया। यह पाँचवाँ शिष्य अपने केशों के नीचे के, यानी मस्तिष्क को बड़ी ही बुद्धिमानी से उपयोग मेंलाने की येग्यता रखता है। इसके पीछे गुरुजी का यही संकेत है। इसीलिए मैंने उसे उपमंत्री के पद पर नियुक्त किया।" प्रधान मंत्री ने कहा।

उनके जवाबों से युवराज के सारे संदेह दूर हो गये। उसने प्रधानमंत्री के विवेक और राजनीतिक गहरी सूझ-बूझ की भरपूर प्रशंसा की।

सिक्कों की गठरी

ब्रह्मदत्त जिन दिनों काशी पर राज्य करते थे, उस समय बोधिसत्व ने एक धनी किसान के घर जन्म लिया । ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता गया, त्यों-त्यों वह परिवार भी संपन्न होता गया। बोधिसत्व के एक छोटा भाई था ।

थोड़े दिन बाद धनी किसान का देहांत हो गया । उसके परिवार से संबंधित एक गाँव में कर वसूली के लिए दोनों भाई चल पड़े । वहाँ पर किसानों से उन्हें प्राप्त होनेवाले अनाज के साथ एक हजार सिक्कों की नक़द राशिभी मिली । उस धन को लेकर दोनों भाई काशी नगर के लिए चल पड़े ।

रास्ते में उन्हें एक नदी पार करना पड़ा। नाविक के लौटने में देरी थी । इसलिए दोनों भाइयों ने अपने साथ लाये खाद्य पदार्थों की गठरी खोल कर भोजन किया और पानी पी लिया ।

बोधिसत्व ने अपनी आदत के मुताबिक़ अपने हिस्से का थोड़ा पदार्थ बचाकर उसे नदी में फेंक दिया । उस पदार्थ को नदी में निवास करनेवाले एक जलभूत ने पकड़ लिया। उस पदार्थ के खाने पर उसे एक दिव्य शक्ति प्राप्त हो गई। जिसके द्वारा जलभूत ने यह समझ लिया कि उस पदार्थ को फेंकने वाला व्यक्ति कौन है।

बोधिसत्व की जब भूख मिट गई तब उसने अपना एक वस्त्र नदी के किनारे बालू पर बिछाया और उस पर लेट गया। पर बोधिसत्व का छोटा भाई ईर्ष्यालु था।

उसके मन में यह दुर्बुद्धि पैदा हुई कि वह अपने भाई के हिस्से को भी हड़प ले। इस विचार के आते ही उसने सिक्कोंवाली गठरी जैसी एक और गठरी तैयार की और उसमें कंकड़ डाल दिये। उन दोनों गठरियों को अपने भाई की आँख बचा कर अपनी पोशाक में छिपा लिया।

इसके थोड़ी देर बाद नाविक आ पहुँचा। इस

बीच बोधिसत्व भी नींद से जाग उठा। दोनों भाई नाव पर सवार हुए। नाव नदी की मंझधार में आ गई। अपनी युक्ति के अनुसार छोटे भाई ने कंकड़ों से भरी गठरी को नदी में खिसका दिया। उसका यह काम कपटपूर्ण था। इसलिए एक गठरी को नदी में खिसकाते वक़्त उसके हाथ कांप उठे। वह चिल्ला उठा- ''भैयाजी! सिक्कों की गठरी नदी में गिर गई।''

इस पर बोधिसत्व ने कहा, ''मेरे छोटे भाई! वह संपत्ति हमारी न थी, इसलिए वह नदी में गिर गई। उसके वास्ते चिंता करना बेवकूफी ही होगी।''

इसके बाद बोधिसत्व के द्वारा फेंके गये खाद्य पदार्थ को खानेवाले जलभूत ने अपनी दिव्य शक्ति के द्वारा यह जान लिया कि नदी में सिक्कों की गठरी गिर गई है। साथ ही उसने बोधिसत्व के छोटे भाई के कपट को भी समझ लिया। उस भूत ने एक बड़ी मछली को प्रोत्साहित करके उस सिक्कोंवाली गठरी को निगलने दिया। इसके बाद वह भूत उस मछली पर ऐसी निगरानी रखने लगा जिससे वह मछली उसकी आँख बचाकर कहीं भागने न पाये।

थोड़े दिन बाद बोधिसत्व और उसका छोटा भाई काशी नगर को लौट आये। घर लौटते ही छोटे भाई ने दूसरी गठरी को खोल कर देखा। उसमें कंकड़ भरे थे; अपनी भूल पर पछताते हुए चिंता के मारे छोटे भाई ने खाट पकड़ ली।

एक दिन मछुओं ने नदी में जाल फेंके। जलभूत ने अपनी दिव्य शक्ति के द्वारा ऐसा उपाय किया जिससे सिक्कों की गठरी को निगलने वाली मछली उस जाल में फँस जाये। मछुए उस मछली को बाजार में बेचने ले गये। जिन लोगों ने मछली को खरीदने के ख़्याल से उसका दाम पूछा, उन लोगों से वे कहने लगे, ''इस मछली का दाम एकहज़ार एक सिक्का है!''

इस पर सब लोग यह सोच कर हँसने लगे कि इन मछुओं के दिमाग ख़राब हो गये हैं! इसके बाद मछुए उस मछली को बोधिसत्व के घर ले गये और उसे बोधिसत्व के हाथ बेचना चाहा।

बोधिसत्व ने पूछा- ''बताओ, इस मछली का दाम क्या है?''

''आपके लिए तो एक ही सिक्का है!'' मछुओं ने जवाब दिया।

''दूसरों के हाथ इसे कितने सिक्कों में बेचना चाहते हो? तुम्हारी बातों में कोई रहस्य छिपा हुआ है!'' बोधिसत्व ने पूछा।

''दूसरे लोगों से हम एक हज़ार एक सिक्का लेंगे!'' मछुओं ने साफ़ जवाब दिया।

बोधिसत्व ने आश्चर्य में आकर उसे एक सिक्के में खरीद लिया। इसके बाद बोधिसत्व और उसकी पत्नी ने मिलकर जब उस मछली को काटा, तब उसके पेट में से एक हज़ार सिक्कोंवाली गठरी निकल आई। बोधिसत्व ने पहचान लिया कि वह गठरी उसी की है।

बोधिसत्व ने अपनी पत्नी को समझाया - ''यह गठरी तो हमारी ही है!''

फिर वह बोला, ''ये मछुए तो दिव्य ज्ञान रखने वाले मालूम होते हैं। उन लोगों ने यह बात समझ ली कि मछली के पेट में रहनेवाली सिक्कों की गठरी मेरी ही है!

इसीलिए उन लोगों ने कहा था कि दूसरों के लिए तो इस मछली को वे एक हज़ार एक सिक्कों में बेचना चाहते हैं और मेरे लिए तो वे एक ही सिक्के में! वे एक सिक्का जो ज़्यादा लेना चाहते थे, वह उनकी मजूरी है।''

इसके बाद बोधिसत्व यह सोचने लगा कि इन मछुओं को ऐसा दिव्य ज्ञान कैसे प्राप्त हो गया ! तभी उसे यह दिव्य वाणी सुनाई दीः

''महानुभाव! मैं नदी में निवास करने वाला एक जलभूत हूँ! एक दिन आपने नदी में जो खाद्य पदार्थ फेंका था, उसे खाकर मैंने दिव्य शक्ति प्राप्त की है। पानी में गिरनेवाली सिक्कों की गठरी को मैंने ही एक मछली के द्वारा निगलने दिया और मछुओं को भी प्रोत्साहित कर मैंने ही उन्हें आप के पास भेज दिया था। इस तरह से मैं आप के ऋण को चुका पाया। लेकिन आप अपने दुष्ट भाई को इस संपत्ति में से कोई हिस्सा न दीजिए।''

जलभूत ने जो उपकार किया इस पर बोधिसत्व बहुत प्रसन्न हुआ। लेकिन अपने छोटे भाई के मामले में उसकी सलाह का पालन नहीं किया। भ्रातृ न्याय के अनुसार बोधिसत्व ने अपने छोटे भाई को पांच सौ सिक्के दिये और इस तरह अपने भ्रातृ प्रेम को प्रकट किया।

विष्णु पुराण

लक्ष्मी वेदवती के रूप में जन्म लेकर जब तपस्या कर रही थी, तब रावण ने उनका जूड़ा पकड़ लिया। रावण के स्पर्श से अपवित्र होने के कारण उसने अपने शरीर को योग-अग्नि में भस्म कर लिया और लंका में नया जन्म ग्रहण किया।

लंका में महल के निकट ही एक सुन्दर सरोवर था। रावण प्रतिदिन की तरह उस सरोवर में स्नान करके शिव जी की पूजा के लिए कमल के फूल तोड़ रहा था। तभी उसने प्रकाश बिखेरता हुआ एक बड़ा-सा कमल का फूल देखा। रावण जब उस कमल के पास पहुँचा तो वहाँ उसने उसकी पंखुड़ियों में, सुनहले प्रकाश में लिपटी एक नवजात बालिका देखी।

तभी उसे यह आकाश वाणीसुनाई पड़ी, "हे रावण, यह बालिका तुम्हारे जीवन और तुम्हारी लंका के लिए धूमकेतु बन कर आई है।"

रावण ने तुरत राक्षसों को इस शिशु का बध करने का आदेश दे दिया। किन्तु बहुत प्रयास करके भी राक्षस इस शिशु को मार न सके। जिन तलवारों से वे इसकी हत्या करना चाहते थे, वे तलवारें गायब हो गईं।

जब राक्षसों ने शिशु को आग में जलाना चाहा तो अग्नि शान्त हो गई और जब उसे चट्टान पर पटक कर मारना चाहा तो पत्थर फूल बन गये। हिंसक पशुओं के सामने जब उसे डाला गया तो वे भी भाग गये। तब राक्षसों ने तंग आकर पाँच धातुओं से बने एक बक्स में उस कन्या को बन्द कर समुद्र में फेंक दिया। वह पेटी समुद्र को पार कर पृथ्वी को चीरती बहुत दूर चली गई।

मिथिला के राजा जनक बड़े ज्ञानी और राजर्षि

थे। वे यज्ञ करने के लिए ज़मीन को हल द्वारा समतल करवा रहे थे। उस समय हल के फाल से किसी चीज़ के टकराने की आवाज़ आई। वहाँ पर खोदने पर एक पेटी मिली, जिसमें एक सुन्दर कन्या को देख कर राजा जनक ने धरती माता का प्रसाद समझ उसे गोद में ले लिया।

हल की नोंक को सीता कहते हैं। हल चलाते समय मिलने के कारण सीता के नाम से, जनक की बेटी होने के कारण जानकी तथा ज़मीन के अन्दर से उत्पन्न होने के कारण भूजाता के नाम से वह अत्यन्त लाड़-प्यार में पलने लगी।

एक दिन सीता अपनी सहेलियों के साथ गेंद खेल रही थी। खेलते-खेलते गेंद शिव धनुष के नीचे चली गई। सीता गेंद को खोजते-खोजते शिव धनुष के पास आकर तथा धनुष को बायें हाथ से उठा कर गेंद वापस ले आई। उसके बाद उस धनुष को उठा लाकर खिलौने की तरह उससे खेलने लगी। उस भारी शिव धनुष को खिलौने की तरह उठाते देख कर राजा जनक को बड़ा आश्चर्य हुआ।

राजा जनक के पूर्वज शिव जी से प्राप्त उस धनुष की, परम्परा से, पूजा करते आ रहे थे। त्रिपुरासुर के संहार के समय शिव जी ने उसी धनुष का प्रयोग किया था। उस शिव धनु को तीन सौ शक्तिशाली व्यक्ति एक साथ मिल कर ही उठा सकते थे।

इसलिए राजा जनक ने सोचा कि ऐसे भारी धनुष को इस प्रकार उठा लेने वाली कोई साधारण मानवी नहीं हो सकती। अतः इस धनुष पर बाण चढ़ाने वाला पुरुष ही इसका योग्य बर हो सकता है। सीता के बड़ी होने पर स्वयंबर के समय राजा जनक ने इसीलिए ऐसी घोषणा करवाई।

इधर अपने यज्ञ की रक्षा के लिए विश्वामित्र ने दशरथ से राम-लक्ष्मण को भेजने के लिए अनुरोध किया। किन्तु दशरथ बोले, "महर्षि! ये छोटे-छोटे कोमल बच्चे राक्षसों से यज्ञ की रक्षा नहीं कर पायेंगे। इन्होंने तो अभी धनुर्विद्या का अभ्यास भी नहीं किया है।"

इस पर दशरथ को आश्वासन देते हुए विश्वामित्र बोले, "इसीलिए मैं इन्हें लेने आया हूँ। राजकुमारों को जिन युद्ध विद्याओं की आवश्यकता होती है, उन सब में मैं इन्हें निपुण बना दूँगा। आप चिन्ता न करें राजन!"

वसिष्ठ जी ने मुस्कुराते हुए विश्वामित्र की प्रशंसा की और कहा, "विश्वामित्र जो भी कह रहे हैं, वह जन-कल्याण के हित में है।"

राजा दशरथ ने वसिष्ठ के आदेश पर बड़े दुख के साथ राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ बिदा किया। राम-लक्ष्मण मुनिवेश में धनुष-बाण लेकर विश्वामित्र के पीछे-पीछे चल पड़े।

रास्ते में धनुर्विद्या की गूढ़ बातों पर प्रकाश डालते हुए विश्वामित्र राम-लक्ष्मण के साथ सिद्धाश्रम पहुँचे। विश्वामित्र की देखरेख में राम-लक्ष्मण धनुर्विद्या में पारंगत हो गये।

विश्वामित्र यज्ञ आरम्भ ही कर रहे थे कि ताड़का नाम की राक्षसी ने इनके आश्रम पर हमला कर दिया। विश्वामित्र ने राम को ताड़का-वध का आदेश दिया। गुरु की आज्ञा पाकर राम ने ताड़का पर बाणों की वर्षा कर दी। वह भयंकर गर्जन करती हुई पृथ्वी पर गिर पड़ी। कुछ देर छटपटा कर उसने दम तोड़ दिया। विश्वामित्र ने रामचंद्र के बाण-कौशल की प्रशंसा की।

विश्वामित्र ने अस्त्र-शस्त्र विद्या सम्बन्धी कुछ उपदेश देकर राम-लक्ष्मण को यज्ञ-रक्षा का आदेश दिया। तभी मारीच और सुबाहु यज्ञशाला पर टूट पड़े। राम ने सुबाहु को अपने बाणों से मार गिराया। मारीच घायल होकर भाग गयाऔर समुद्र में कूद पड़ा और बहता-बहता लंका जा पहुँचा।

यज्ञ बिना किसी बाधा के पूरा हो गया। राम के हविष्य से यज्ञ की पूर्णाहुति की गई। अन्तिम आहुति पड़ते ही यज्ञकुण्ड की ज्वाला से एक दिव्य बाण प्रकट हुआ। विश्वामित्र ने राम को वह बाण भेंट करते हुए कहा, "यह दिव्यास्त्र तुम्हारे लिए है राम! यह तुम्हारे ही नाम से जगत में विख्यात होगा। यह तुम्हारे शत्रु का सिर काट कर पुनः तुम्हारे पास वापस आ जायेगा।"

राम ने गुरु के आशीर्वाद के समान पहले उस बाण को अपनी आँखों से लगाया, फिर अपने तरकश में रख कर गुरु के चरण-स्पर्श किये।

विश्वामित्र ने राम को आशीर्वाद देते हुए कहा, "हे राम! मैंने अपनी सारी अस्त्र विद्या तुम्हेंसिखा दी है। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे तुम्हारा गुरु कहलाने का अवसर मिला। मैं अपनी इस प्रसन्नता को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता।"

राम ने विनय भाव से कहा, "मैं धन्य हूँ कि आपने मुझे अपनी कृपा का पात्र समझा और

अपना शिष्य बना कर अपना ज्ञान प्रदान किया।''

कुछ दिनों के बाद विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को साथ लेकर मिथिला की ओर चल पड़े। रास्ते में, गौतम मुनि के आश्रम के निकट राम के चरण-स्पर्श से एक शिला नारी बन गई। यह गौतम की पत्नी अहल्या थी जो शापवश शिला बन गई थी।

उसी समय गौतम मुनि भी अपनी लम्बी तपस्या समाप्त कर वहाँ पहुँचे और भक्ति पूर्वक प्रणाम करते हुए राम से बोले- ''तुम्हारे चरणों के पावन-स्पर्श से मेरी पत्नी शाप से मुक्त हो गई। निस्सन्देह तुम परम प्रभु के अवतार पावन राम हो।''

इसके बाद गौतम मुनि ने अपने आश्रम में विश्वामित्र तथा राम-लक्ष्मण का अतिथि-सत्कार किया। भोजन के बाद विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को लेकर आगे चल पड़े।

राजा जनक ने सीता के स्वयंबर में भाग लेने के लिए सभी ऋषि-मुनियों को आमंत्रित किया था। इस काम को गौतम मुनि के पुत्र शतानन्द कर रहे थे।

शतानन्द विश्वामित्र को आमंत्रित करने के लिए सिद्धाश्रम की ओर जा ही रहे थे कि मार्ग में उनसे भेंट हो गई।

विश्वामित्र को देख कर शतानन्द झट पालकी से नीचे उतर आये और बिश्वामित्र के चरण स्पर्श कर राजा जनक का निमंत्रण उन्हें निवेदित किया। विश्वामित्र से अपनी माता अहल्या की मुक्ति का समाचार सुन कर शतानन्द बहुत प्रसन्न हुआ तथा राम के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर अनेक प्रकार से उनका स्तुति-गान किया। फिर वे अपने माता-पिता के आश्रम की ओर चल पड़े।

विश्वामित्र और राम लक्ष्मण कुछ दिनों के बाद मिथिला पहुँचे।

उस समय सीता और उर्मिला उद्यान में विहार कर रही थीं। उसी उद्यान से होकर राम और लक्ष्मण जा रहे थे।

सीता और रामचंद्र दोनों की नजरें एक दूसरे पर पड़ीं। लक्ष्मण और उर्मिला ने भी एक दूसरे को देखा।

जब स्वयंबर शुरू हुआ, तो सभी राजाओं ने एक-एक करके अपनी शक्ति की आजमाइश की। किन्तु कोई वीर धनुष को हिला न सका, उसे

उठा कर उस पर बाण चढ़ाना तो दूर रहा। अन्त में सभी राजाओं ने मिल कर उसे उठाना चाहा, फिर भी वह टस से मस न हुआ।

यह देखकर राजा जनक बहुत चिन्तित हुए। उन्होंने दुख और रोष में यह घोषणा की, "यदि मुझे यह मालूम होता कि पृथ्वी वीरों से खाली हो गई है तो मैं सीता के विवाह के लिए ऐसी प्रतिज्ञा ही नहीं करता।"

राजा जनक का यह बचन सुन कर सभी राजा बौखला उठे। लक्ष्मण से भी नहीं रहा गया। उसने जनक से कहा कि ऐसा कह कर उन्होंने राम का अपमान किया है।

तब राजा के अनुरोध पर तथा अपने गुरु विश्वामित्र का आदेश पाकर विनम्रता की मूर्ति, शान्त, धीर राम धीरे-धीरे धनुष के पास गये और उन्होंने भक्तिपूर्वक उसे प्रणाम किया। फिर उन्होंने धनुष को इस प्रकार सरलता से उठाया जैसे हाथी गन्ने को उठा लेता है।

राम ने जैसे ही धनुष की डोरी खींच कर उस पर बाण चढ़ाना चाहा कि एक भयंकर ध्वनि के साथ धनुष टूट गया। राजा जनक इस बात से प्रसन्न थे कि राम जैसा वीर और मोहक स्वरूप वाला सीता को बर मिलेगा, लेकिन धनुष के टूट जाने से वे भयभीत भी थे।

सीता राम को धनुष तोड़ते देख कर मन ही मन गद्गद् हो रही थी।

धनुष टूटने की भयंकर ध्वनि चारों दिशाओं में फैल गई। दक्षिण महा सागर में महेंद्र पर्वत पर तप करने वाले परशुराम का ध्यान इससे टूट गया।

परशुराम को विष्णु केप्रतिरूप गोलोक वासी श्रीकृष्ण की बातों का स्मरण हो आया। विष्णु ने राम के रूप में अवतार ले लिया था और परशुराम

के अवतार की अवधि समाप्त हो चुकी थी। इसलिए अब परशुराम श्रीकृष्ण से प्राप्त धनुष को विष्णु के अंश श्रीरामचंद्र को सौंपने चल पड़े।

इधर जनकपुर में धनुष भंग होते ही सीता ने रामचंद्र के गले में वरमाला डाल दी। राजा जनक ने विवाह की रस्म पूरी करने के लिए राजा दशरथ को बुलवा भेजा।

बड़ी धूम धाम से सीता और राम का विवाह सम्पन्न हुआ। एक ही मण्डप में राम के अन्य तीनों भाइयों का भी विवाह हुआ। लक्ष्मण का उर्मिला के साथ, भरत का मांडवी के साथ तथा शत्रुघ्न का शतरूपा के साथ विवाह हुआ।

विवाह वेदी पर जब सीता और राम फेरे लगा रहे थे तब सीता की अंजलि के मोती ऐसे चमक रहे थे मानो खिले कमल में पराग झाँक रहे हों।

बड़े हर्ष और उल्लास के साथ जब विवाह का समारोह समाप्त हुआ तब राजा दशरथ ने अपने पुत्रों तथा बंधुओं के साथ राजा जनक से विदा ली और अयोध्या के लिए चल पड़े। तभी क्रोध से पागल बने परशुराम वहाँ पहुँच गये और शिव धनुष को तोड़ने वाले अपराधी के बारे में पूछताछ करने लगे। राजा दशरथ उनके क्रोध से भयभीत होकर तुरत रथ से उतर गये और राम के अपराध के लिए क्षमा माँगते हुए प्रार्थना करने लगे कि राम के बदले मुझे जो चाहें सज़ा दे दीजिए।

परशुराम गरजते हुए राम से बोले, ''तुमने शिव धनुष तोड़ कर मेरे गुरु का अपमान किया है। लेकिन क्या तुम मेरे धनुष पर बाण चढ़ा सकते हो?'' इतना कहते हुए उन्होंने अपना धनुष राम को दिया। धनुष को ग्रहण करते ही विष्णु का अवतार-अंश, जो परशुराम में था, राममें लय हो गया। राम ने आसानी से धनुष की डोरी खींच ली। यह देखते ही परशुराम को विश्वास हो गया कि विष्णु का दूसरा अवतार हो गया और अब उनकी भूमिका समाप्त हो गई है।

परशुराम का क्रोध शान्तहो गया और उन्होंने राम से क्षमा माँगी। अपना धनुष राम को देकर वे उनसे विदा ले पुनः तपस्या के लिए चले गये।

राम अपने माता-पिता और भाइयों के साथ हर्षोल्लास के साथ अयोध्या लौट आये।

सिद्धार्थ का गणित

गौतम हेलापुरी का निवासी था। उसके एक बेटा और एक बेटी थी। बेटा सिद्धार्थ छः साल का था तो बेटी पावनी तीन साल की थी। कहते थे कि सिद्धार्थ पढ़ाई -लिखाई में बड़ा ही तेज़ है।

एक दिन, सुगंधिपुरी से उसका मामा माणिक अपने बहनोई, दीदी व बच्चों को देखने उनके घर आया। वह अपने साथ रे बड़ी के गोले ले आया। थैली में से उसने दस गोले निकाले और उन्हें सिद्धार्थ को देते हुए कहा। ''अरे सिद्धार्थ, समझ लो कि इनमें से आधे गोले तुमने अपनी बहन को दिये, तो कितने गोले बच जायेंगे?'' अपने भानजे की अक़्लमंदी की परीक्षा के उद्देश्य से उसने पूछा।

सिद्धार्थ ने फ़ौरन कहा, ''सात और होंगे मामाजी।'' माणिक को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि उसके भानजे ने इतने साधारण गणित में भी ग़लती कर दी। उसने सिद्धार्थ से कहा, ''लगता है, तुमने मेरा सवाल ठीक तरह से समझा नहीं। तुम्हारे पास जो दस गोले हैं, उनमें से आधे, अगर तुम अपनी बहन को दोगे तो तुम्हारे पास कितने और गोले बच जायेंगे।''

''मामाजी, मैंने कहा न, मेरे पास सात और गोले होंगे,'' सिद्धार्थ ने मुस्कुराते हुए जोरकर कहा।

''तुम तो बेवकूफ़ निकले। मैंने समझा कि तुम बड़े अक़्लमंद हो। तुम गणित जानते ही नहीं।'' माणिक ने चिढ़ते हुए कहा। ''गणित मैं बखूबी जानता हूँ, मामाजी। मेरी बहन बिल्कुल जानती नहीं है न,'' मुस्कुराते हुए उसने कहा।

माणिक का चेहरा फीका पड़ गया, पर अब उसे विश्वास हो गया कि उसका भानजा गणित में सिद्धहस्त है और लोगों का कहना भी सही है।

- रामकुमार

धन, जो काम न आये

पंचभूत धनाढ्य था। पुरखों से लेकर अब तक उसका परिवार धनी परिवार था। उसने जहाज में जाकर बिदेशों में व्यापार करने से लेकर सूद का व्यापार तक किया और इतना धन कमाया कि पीढ़ियों तक आराम से बैठकर खा-पी सकते हैं। जितना भी धन उसने कमाया, उसे उसने तीन पीपों में भर दिया और उन्हें जमीन के अंदर छिपा दिया।

एक पीपे में सोने की अशर्फियाँ, दूसरे में चांदी की अशर्फियाँ और तीसरे में तांबे की अशर्फियाँ भर दीं। हर दिन वह जगह देख आता था और उन्हें वहाँ सुरक्षित देखकर संतुष्ट लौटता था।

अकस्मात् पड़ोसी राजा ने उस देश पर आक्रमण कर दिया। वह राजा आज तक किसी भी युद्ध में हारा नहीं था। लोग उसे अजेय राजा कहते थे। धनी पंचभूत को लगने लगा कि कहीं भाग जाना ही श्रेयस्कर है इसलिए उसने भाग जाने का निश्चय किया। पर अशर्फियों से भरे पीपों को अपने साथ ले जाना नामुमकिन था, इसलिए उसने मोम पिघलाया और तीनों पीपों में भरी अशर्फियों पर बिछा दिया। जल्दबाजी में उसने पीपों में ताला नहीं लगाया और सपरिवार देश छोड़कर भाग गया।

कुछ ही दिनों में शत्रु सेना ने धनिक के नगर पर अपना आधिपत्य जमा लिया। उनकी नज़र पहले धनिकों के घरों पर पड़ी। उनके घरों में जो भी संपत्ति थी, उसे सेना ने अपने अधीन कर लिया। पंचभूत के घर में ज़मीन के अंदर गाड़े गये पीपों को भी उन्होंने देख लिया। सेनाधिपति ने उन्हें ग़ौर से देखा और कहा, ''ये तो मोम के पीपे हैं। इसी कारण घर का मालिक इन्हें छोड़कर चला गया। कोई ख़रीदनेवाला हो, तो इन्हें बेच डालो,'' सिपाहियों को उसने हुक़्म किया।

सैनिकों ने बहुत कोशिश की, पर ख़रीदनेवाला कोई भी आगे नहीं आया। यों कुछ दिन गुज़र

गये। आख़िर एक ग़रीब उनके पास आया और कहने लगा, ''साहब, मैं मोम की बत्तियाँ बनाता हूँ और उन्हें बेचकर पेट भरता हूँ। ये पीपे सस्ते दाम में मुझे दे दीजिये।''

शत्रु सैनिक ने तुरंत उससे पैसे लिये और कहा, ''इनकी रखवाली करते-करते थक गया हूँ। जल्दी इन्हें यहाँ से ले जाओ।''

उस ग़रीब ने कुलियों के ज़रिये उन पीपों को अपने घर पहुँचवाया। शत्रुओं के चले जाने और परिस्थितियों में सुधार हो जाने के बाद उस ग़रीब ने मोम की बत्तियाँ बनानी चाहीं। उसने पीपे में हाथ रखा तो कोई चीज़ सख्त लगी। उत्सुकता वश उसने खोला तो देखा, सोने की अशर्फियों की भरमार है। चकित होकर उसने और सावधानी से देखा तो मोम के नीचे सोने की अशर्फियाँ भरी पड़ी थीं। वह यह दृश्य देखकर भौचक्का रह गया।

ग़रीब ने बाकी दोनों पीपों को भी देखा तो उनमें पाया, चांदी और तांबे की अशर्फियाँ। उसे अपार आश्चर्य हुआ और आनंद भी। पर उसने यह रहस्य सबसे छिपाकर रखा। जिस कमरे में उसने ये पीपे सुरक्षित रखे, उस कमरे के दरवाज़े में बड़ा ताला लगाया और अन्य आवश्यक व्यवस्था भी की। अब इसे ग़रीबी का डर नहीं रहा, परंतु किसी को शक भी होने नहीं दिया कि अब वह अमीर बन गया। वह यथावत् सादा जीवन बिताता रहा।

समय बीतता गया। वह सोच में पड़ गया, ''यह धन-राशि कब खर्च होगी? ज़मींदार की ही तरह वैभवपूर्ण जीवन बिताने लग जाऊँ तो अवश्य ही रहस्य खुल जायेगा और कष्टों में फंस जाऊँगा।'' उसे कोई उपाय नहीं सूझा। एक दिन वह अपने दोस्त दर्जी से मिलने गया और नये

कपड़े सिलवाये। फिर मुट्ठी भर अशर्फ़ियाँ उसके हाथ में रख दीं।

सोने की अशर्फ़ियों को देखकर दर्ज़ी स्तब्ध रह गया और कहते जाने लगा, ''बाप रे, इतनी अशर्फियाँ! मैं इन्हें लूँगा नहीं। मेरा पारिश्रमिक मात्र मुझे दो। बस, वही काफी है।''

''मेरे पास पीपे भर का सोना है। आख़िर मैं तुम्हारा दोस्त हूँ। दोस्त से लेना कोई पाप नहीं है। तुम थोड़े ही धनी हो। ये अशर्फ़ियाँ रखो। इनकार मत करना।'' मोमबत्तीवाले ने ज़ोर देकर कहा।

दर्ज़ी को उसकी बातों पर बिश्वास नहीं हुआ। उसे लगा कि यह मुझसे अवश्य ही कु छ छिपा रहा है। इसलिए उसने पूछा, ''अचानक इतना सोना तुम्हें कहाँ से मिल गया? कहीं पागल तो नहीं हो गये?''

''मेरे साथ चलो। खुद देखना,'' कहते हुए मोमबत्ती वाला दर्ज़ी को अपने साथ घर ले गया। उसने स विस्तार उ ससे ब ताया कि उ सने श त्रु सैनिकों से इन पीपों को कैसे खरीदा और कैसे अपने घर ले आया। पीपों में भरी सोना, चांदी व ताम्बे की अशर्फियाँ उसे दिखायीं और कहा, ''यह सब मैं क्या करूँगा? इसमें से आधा तुम्हें दे देता हूँ। ले जाओ।'' मोमबत्ती बनानेबाले ने कहा।

दर्ज़ी ने मुट्ठी भर सोने की अशर्फियाँ अपनी जेब में भर लीं और कहा, ''ज़िन्दगी भर आराम से रहने के लिए इतना काफी है। मेरी एक बात ध्यान से सुनो। हज़ार सालों में भी इतनी रक़म तुम खर्च नहीं कर पाओगे। और न मरते दम तक इसे देखते हुए खुश रह सकोगे। यह निरर्थक धन है। यह वह धन है, जो काम न आये। अच्छा इसी में है कि तुम इसे ग़रीबों में बांट दो। कम से कम वे सुखी रहेंगे और साथ ही धन का सदुपयोग भी होगा।''

मोमबत्तीवाले को द र्ज़ी की स लाह अ च्छी लगी। उसने चुपचाप अशर्फ़ियाँ ग़रीबों में बांटीं, ज़रूरतमंदों को अशर्फ़ियाँ देकर उनकी ज़रूरतें पूरी कीं पर यह काम उसने धीरे-धीरे किया, जिससे किसी को कोई शंका न हो। जो बचा, उससे जीवन -पर्यंत आराम से ज़िन्दगी गुज़ारी।

17
राजा शान्तिदेव यह सोच कर सन्तुष्ट थे कि उसका मातृप्रेम से वंचित बेटा जयानन्द के साथ सुरक्षित है। क्रांतिकारियों के नेता बसन्त के हाथों में उसने अंतिम सांस ली, जिसने राज्य हड़पनेवाले वीर सिंह के विरुद्ध आवाज उठाई थी। वीरसिंह जंगल में शिकार के लिए जाता है। उसके सैनिक वृद्धा भालूकी को पकड़ लेते हैं। अचानक वे एक आवाज सुनते हैं "रुक जाओ !"
आर्य
अज्ञात राजकुमार का रहस्य
चित्र : गाँधी अय्या

मात्र एक मुनि!
आदेश सूचक आवाज सुनकर वीर सिंह स्तब्ध रह जाता है।

जयानन्द एक झाड़ी की ओर से आते हुए दिखाई देते हैं।
जंगल के इस भाग को कभी अशान्त नहीं किया गया।
मैं यह पहली बार सुन रहा हूँ।

एक अच्छा राजा कभी परम्परा को नहीं तोड़ता।
क्या मैं एक अच्छा....

वीर सिंह का वाक्य पूरा होने से पहले उसके किसी आदमी की चीख सुनाई पड़ती है।
इस आदमी को बन्दी बना लो!
आ-आ...ह! भालू ने मुझे नोच लिया!

भागो, भागो !
तुमने प्रकृति माता के क्षेत्र का अतिक्रमण किया है!

अरे, यह क्या? तीर ! एक सन्देश !
अचानक एक तीर वीर सिंह के सामने आकर धरती में चुभ जाता है।

वीर सिंह!
छोड़ दो और वहाँ
से चले जाओ।
बकवास! जिसने भी तीर छोड़ा है वह आस-पास ही होगा। जाओ और उसे पकड़ लो!
वीर सिंह सन्देश पढ़ते-पढ़ते क्रोध से कांपने लगता है।
सैनिक इधर-उधर हर जगह उसे ढूँढते हैं, लेकिन धनुष-बाण के साथ उन्हें कोई न मिला।
अचानक चारों ओर से चिल्लाने की आवाज आने लगी।
ओह! नहीं! यह तो मेरे आदमियों की चीख-चिल्लाहट है!
बचाओ! बचाओ!
आह! आह!
एक भालू मेरे ऊपर चढ़ गया है! बचाओ!
वीर सिंह के आदमी यह देख कर दंग रह गये कि अचानक जानवरों ने उन पर हमला कर दिया।
महाराज! हम लोग यहाँ से भाग चलें।
हाँ, हम लोग महल में वापस चले जायेंगे।
तभी एक बन्दर वीर सिंह के ऊपर उछल कर आता है....
उफ! एक बन्दर!
मेरी पगड़ी गई!
और मेरा घोड़ा किधर है?

वीर सिंह दौड़ने लगता है। अब वह अकेला है। पीछे से एक बाघ उसका पीछा करता है...
जबर सिंह का घोड़ा भी गया!
और वह गिर जाता है। बाघ उस पर हमला कर देता है और उसे...
एक भारी आवाज सुनाई पड़ती है।
काफ़ी हो गया बाघा। आर्य तुम सब को वापस चले आने के लिए आज्ञा देता है।
वीर सिंह उठता है और घूम कर देखता है कि जानवरों को वापस जाने का हुक्म किसने दिया।
वह कैसे जानवरों को हुक्म देता है! आश्चर्य है!
आर्य? यह कौन हो सकता है?

बीर सिंह को अपने ऊपर शर्म आती है।
नहीं! मैं दरबार में कैसे मुँह दिखाऊँ?
बीर सिंह सेनापति जबर सिंह और उसके कप्तानों के साथ विचार-विमर्श करता है।
क्या तुम्हारा यह कहना है कि विद्रोहियों का कहीं पता नहीं है।
हाँ, महाराज!
महाराज! वे आपकी सख्त कार्रवाइयों से डर कर भाग गये हैं।
हमलोग एक-दो साल चुपचाप रहेंगे।
वह जयानन्द की भेजी हुई मिलि आ रही है। मुनि आ ही रहे होंगे।
जयनगर के सरदार सुखदेव जयानन्द के स्वागत के लिए तैयार होते हैं।
वे तो द्वार पर आ चुके हैं। मुझे जाकर उनकी अगुवानी करनी चाहिये।
बाघा! तुम यहीं ठहरो।
कृपया मेरा प्रणाम स्वीकार करें बाबा।
मैं तुमसे मिलना चाह रहा था।
राजकुमार कैसे हैं?
आर्य सकुशल है। मैं एक विचित्र समाचार लेकर आया हूँ।
-क्रमशः

बिजली के बिना, मुश्किल है जीना!

"आह! कितनी गर्मी है! मम्मी, जरा फैन चला दो!'' सोफे पर धड़ाम से गिरती हुई वीना चिल्लाई। लेकिन उसकी माँ शान्त है। वीना ऊपर देखती है और पाती है कि लाइट्स ऑन नहीं हैं। ''ओह, नो!'' वीना फिर चीखती है, ''यह मत कहना कि बिजली नहीं है।''

उसकी माँ सहानुभूति के साथ मुस्कुराती है, ''वीना, बिजली बन्द है। सरकार ने आज से तीन घण्टे का बिजली-बन्द घोषित किया है!''

''इन गरम दुपहरियों में, भगवान जाने, हम कैसे जिन्दा रह पायेंगे!'' आह भरती हुई वीना बोली।

''चारा भी क्या है?'' उसकी माँ बेबस होकर कहती है। ''आवाहक्षेत्र में इतना पर्याप्त जल नहीं है कि राज्य की आवश्यकता भर बिजली उत्पादन हो सके।''

वीना गरम शरबत लेकर पीती है। ''मम्मी'', वीना पूछती है, ''क्या कोई ऐसा तरीका नहीं है कि हम कुछ बिजली बचा सकें?''

''क्यों नहीं? निस्सन्देह है। हमें इस बात का ख्याल रखना चाहिये कि हम बिजली बर्बाद न करें। कमरे से बाहर जाते समय लाइट और फैन आफकरने जैसी छोटी बात से भी बड़ा फर्क पड़ता है।'' उसकी माँ बताती है।

वीना अपराध-भाव से शर्मिन्दा महसूस करती है। वह कमरा छोड़ते समय अक्सर यही एक चीज करना भूल जाती है। उसकी माँ बोलना जारी रखती है: ''उसी तरह बहुत-सी ऐसी चीजें हैं जो तुम कर सकती हो। फ्रिज के दरवाजे को देर तक खुला रखने से अधिक बिजली खर्च होती है। स्नान कर लेने के बाद हीटर को भी तुरन्त बन्द कर देना चाहिये। आधार भूत तथ्य यह है कि कोई भी बिजली का उपकरण यदि उपयोग में न हो तो उसे बन्द रखना चाहिये।''

''मैं इसे ध्यान में रखूँगी, मम्मी।'' वीना वादा करती है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

स्वाद–संहिता

पाँचों ज्ञानेन्द्रियों में से जिह्वा कम से कम अभिव्यक्तिशील है। मुख की छत पर की स्वाद कलिका तथा हमारी जिह्वा बताती है कि हमारा भोजन स्वादिष्ट है या नहीं।

जो भी हो, वे केवल चार आधारभूत स्वादों का मजा लेने में हमारी मदद करते हैं यानी मीठा, नमकीन, खट्टा तथा तिक्त। दूसरे सभी स्वादों का आनन्द लेने के लिए हमें अपने घ्राणेन्द्रिय पर निर्भर करना पड़ता है। यही कारण है कि जब तुम्हें जुकाम होता है तब तुम भोजन का आनन्द नहीं ले पाते।

यद्यपि मनुष्य की घ्राणेन्द्रिय पशु की अपेक्षा आधी शक्तिशाली भी नहीं होती, फिर भी कुछ भोजन, विशेषकर तेज महक वाले, मुख्यतया अपने सुवास से हमारी रुचि को उद्दीप्त करते हैं। मछलियाँ अपने मीनपक्ष से, पूँछ से तथा मुख से भोजन का स्वाद लेती हैं। मक्षिकाओं के समान अन्य कृमियों में उनके पैरों में स्वाद कलिकाएँ होती हैं।

तुम्हारा प्रतिवेश

खेद है, हम – मण्डूक पीते नहीं

तुम जानते हो कि मेंढक जलथलीय प्राणी है और अपने जीवनकाल का अधिकांश समय जल में व्यतीत करता है।

वास्तव में, मण्डूकी जल के निकट अण्डे देती है और बेंगची मछली की तरह तैर सकती है। जो भी हो, मण्डूक जल की एक बून्द भी पी नहीं सकते। क्योंकि उनके पास कोई समुचित उपकरण नहीं है।

यह विचित्र लग सकता है क्योंकि ये प्रथम रीढ़दार प्राणी हैं जो स्थल पर चल सकते हैं। मण्डूक अपने चर्म से पानी 'पीते' हैं और सांस लेते हैं, क्योंकि उनका चर्म स्वाभाविक रूप से पारगम्य होता है। इस प्रकार के चमड़े से असुविधा यह है कि वायु को बाहर जाने देते समय शरीर के तरल पदार्थ के भी बाहर निकल जाने की सम्भावना रहती है। इसलिए चमड़े को नम बनाये रखने की निरन्तर आवश्यकता रहती है। यही कारण है कि मेंढक को अधिकांश समय तक पानी के निकट रहने की जरूरत पड़ती है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

चलने के लिए आँखें

क्या तुम विश्वास करोगे कि आँखें बन्द कर देने पर सीधी रेखा में चल पाना कठिन होता है। अनेक प्रयोगों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यह सच है। हम अपने हाथों से किसी चीज को किसी सीधी रेखा में हटा भी नहीं सकते।

यह मानव शरीर की विषमता के कारण होता है। हमारे शरीर की बनावट पूर्णरूप से

संतुलित नहीं है। कंकालतंत्र, मांसपेशी-तंत्र तथा मेरुदण्ड की सीधाई इस विषमता के कारण हैं।

इसलिए जब आँखें बन्द होती हैं, तब ठवन का नियंत्रण मांसपेशीय तंत्र तथा शरीर की बनावट से होता है। यही कारण है कि चलते समय हरेक को आँखें खुली रखनी पड़ती है।

अपने भारत को जानो

भाषा और साहित्य

१. *बुद्धचरित* का लेखक कौन था?

२. ज्ञानपीठ पुरस्कार सर्वप्रथम किसे मिला?

३. तमिल भाषा में *रामायण* किसने लिखी?

४. कृष्णदेव राया का एक दरबारी, कवि और विदूषक भी था। वह कौन था?

५. मराठी समाचार पत्र *केसरी* का संस्थापक कौन था? जिसे कभी बाद में बाल गंगाधर तिलक ने सम्पादित किया था।

(उत्तर: ६६ पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा
चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक
दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

KALANIKETAN BABU

NARAYANAMURTHY TATA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

सितम्बर अंक के पुरस्कार विजेता हैं :
ब्रजेश कुमार पाल
केन्द्रीय विद्यालय क्र.-२
सी.पी.ई. इटारसी (मध्य प्रदेश)

विजयी प्रविष्टि

"मैं कटता हूँ तू काटता है,
हम दोनों से आदमी पेट पालता है।"

"अपने भारत को जानो" के उत्तर

१. अश्वघोष
२. जी.शंकर कुरूप (मलयालम)
३. कम्बर
४. तेलानी रामा
५. विष्णु चिपलुंकर (१८५०-८२)

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

Orissa
The Soul of India
चिलिका
आनन्द धाम का प्रवेश द्वार
अपने नीले प्रसार के वैभव में झिलमिलाती, भारत की विशालतम खारे जल की झील सम्मोहक और शान्त चिलिका, पहाड़ियों से मेखलावृत तथा मरकत-हरित द्वीपों से विश्राम-चिन्हित, विश्व भर के पक्षियों के लिए अभयारण्य और शरण-स्थल है। यह अपने प्रवासी पक्षियों और अपने जलचर जीव-जन्तुओं के भण्डार से जादू की तरह मंत्र-मुग्ध कर देती है। नावों और डोंगियों से भरी-पूरी यह शानदार झील प्राणवन्त भारत की उत्कृष्टता को प्रतिबिम्बित करती है। सचमुच में चिलिका प्यासे नयनों और भूखे हृदयों के लिए स्वादिष्टतम भोजन है।
कोणार्क
पर्व
दिसम्बर १-५